चन्दामामा
मे १९६४
Vapa
GO
N

जीवन यात्रा के पथ पर शक्ति की आवश्यकता है।

डाबर (डा० एस० के० बर्मन) प्राइवेट लि० कलकत्ता-२६

चन्दामामा

बच्चों
के लिए
अनुपम मौज
एवरेस्ट
टाईनी टोट

चपल बच्चों को अपनी पसंद की खाने या पीने की सामग्री, ठंडी या गरम, स्कूल ले जाने के लिए बनाया हुआ "टाईनी टोट" एवरेस्ट वैक्युम फ्लास्क की सभी वैशिष्ट्य एवं सामग्री से युक्त है।

अपने बच्चों के लिए खास बना हुआ "टाईनी टोट" क्या आप उसे नहीं दिलाएंगे? इनकी अनूठी प्रतिभा के विकास में गौरवपूर्ण "टाईनी टोट" विशेष सहयोग देगा। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं।

विकटरी फ्लास्क कम्पनी प्रा० लि०
बम्बई ★ कलकत्ता ★ दिल्ली ★ मद्रास

Vapi-6/63

चन्दामामा
संचालक : चक्रपाणी
यह मई का महीना है। विद्यार्थियों के लिए ग्रीष्मावकाश प्रारम्भ हो गया होगा। सम्भव है कि आप में से कई कहीं भ्रमण के लिए जा रहे हों, या कहीं यात्रा पर जा रहे हों। अच्छा ही है। यात्रा से नये नये अनुभव मिलते हैं। नया ज्ञान प्राप्त होता है।
जहाँ कहीं भी हों, हम आशा करते हैं कि अवकाश के समय हमेशा की तरह "चन्दामामा" आपका मनोरंजन कर सकेगा।
वर्ष : १५ मई १९६४ अंक : ९

भारत का इतिहास

मालवा :

१३०५ अलाउद्दीन खिल्जी ने मालवा को जीता, तैमूर के आक्रमण के समय में (१४०१) मालवा स्वतन्त्र हो गया। दिलावर खान गौरी उसका राजा बना। इसके लड़के अल्पखान ने १४१२ में व्यापारी का वेश बदलकर, उरीसा राज्य पर आक्रमण किया। उरीसा के राजा ने ७५ हाथी उसको देकर, उसे वापिस भेज दिया। चूँकि उसका लड़का गज़नी खान नलायक था, इसलिए उसके मन्त्री महमूद खान ने उसका राज्य हड़प लिया (१४३६ मई)। इस तरह मालवा खिल्जी राजाओं के आधीन आया।

मोहम्मद खिल्जी युद्ध कुशल था। उसने गुजरात, दिल्ली, बहमनी, मेवाड़ राज्यों से युद्ध किया। इन सब युद्धों में मनोरंजक युद्ध वही था, जो इसने मेवाड़ के राजा से किया। दोनों पक्षों ने विजय घोषित कर दी। राणा ने चित्तौड़ में यदि विजय स्तम्भ का निर्माण किया, तो मालवा सुल्तान ने मान्डया में सत मंजला विजय स्तम्भ बनवाया। उसने अपने राज्य का चारों ओर विस्तार किया। मिश्र के खलीफ़ा ने भी इसको अपनी स्वीकृति दी।

१ जून १४६९ में, जब वह मरा, तो एक दिन बाद इसका बड़ा लड़का घियासुद्दीन मालवा का सुल्तान बना। इसका दूसरा लड़का मोहम्मद द्वितीय १५१० में गद्दी पर आया, उसने राजपूत मेदनी राय को अपना प्रधान मन्त्री बनाया। इसके बाद हिन्दू बड़े पदों पर आये। १६५१-६२ तक मालवा मुगल सेनापतियों के हाथ न आया।

गुजरात :

विदेशी व्यापारियों के बन्दरगाहों के कारण गुजरात बड़ा सम्पन्न हो गया। १२९७ में, अल्लाउद्दीन ने उसे जीतकर, दिल्ली साम्राज्य में मिलाया, उसको शासन करनेवाले सुल्तान के प्रतिनिधियों में जफ़र खान था, यह एक राजपूत था, जो मुसलमान हो गया था। १४०१ में इसने अपने को स्वतन्त्र घोषित किया। १४११ में गुजरात के सुल्तान अहमद शा ने, कहा जाता है गुजरात को वास्तविक स्वतन्त्रता दी। इसने ३० साल शासन किया, गुजरात राज्य का विस्तार किया। अहमदाबाद को इसने बनवाया था। यह १४४२ में मर गया।

परन्तु गुजरात को अधिक समृद्ध और विस्तृत करनेवाला मोहम्मद बेगर्हा था। यह छुटपन में ही गद्दी पर आया। ५३ वर्ष इसने शासन किया। तब के इतिहासकारों ने इसके पराक्रम, वीरता और न्याय बुद्धि की प्रशंसा की है। इसने मरते समय भारत में पोर्चुगीज़ों के बढ़ते प्रभाव को कम करने के लिए मिश्र के सुल्तान से भी सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया। १५०८ में बम्बई के दक्षिण में चौल के

पास मिश्र और भारतीय सेना ने मिलकर पोर्चुगीज़ नौकादल को परास्त किया। परन्तु १५०९ में पोर्चुगीज़ों ने दियू के पास मुस्लिम नौका दल को नष्ट किया। उन्होंने अपना समुद्र व्यापार इस प्रकार स्थिर कर लिया। दियो के पास एक फेक्टरी बनाने के लिए भी उन्होंने कुछ जगह ले ली।

१५११ में महम्मद बेगर्हा के मर जाने के बाद, उल्लेखनीय उसका पोता ही है। इसने माल्वा को तो आधीन किया ही साथ ही साथ मेवाड़ से युद्ध करके,

चित्तौड़ को भी घेर लिया। किन्तु हुमायूँ के समय में इसके राज्य का बहुत-सा भाग, मय मालवा के उसके हाथ से निकल गया। १५३७ में पोर्चुगीज़ों ने उसे धोखा देकर मार दिया। १५७१ में अकबर के समय, गुजरात मुगलों के आधीन आया।

काश्मीर :

काश्मीर हिन्दू राजाओं के आधीन था। १३१५ में शामिर्जा राजा की नौकरी में आया। राजा के मर जाने के बाद वह स्वयं गद्दी पर आ गया। वह १३४९ में मरा। इसके बाद ४६ वर्ष तक इसके तीनों लड़कों ने क्रमशः काश्मीर पर शासन किया। अन्तिम लड़के के मर जाने के बाद, उसका लड़का सिकन्दर तख्त पर आया।

१४१० में इसके दूसरा लड़का अपने भाई को हराकर, काश्मीर सिंहासन पर पर जैनुल आबिदीन नाम से आया। इसका ५० वर्ष का शासन इतिहास में प्रसिद्ध है। इसने चोरी, डकैतियाँ बन्द करवा दीं। चीज़ों के दामों को काबू में रखा। लोगों पर उसने कर कम किये। प्रजा के लिए अधिक सुविधायें दीं। हिन्दू पंडितों को उसने अपने दरबार में रखा। सबको उसने धार्मिक स्वतन्त्रता दी। महाभारत और राजतरंगिणी को उसने संस्कृत से फारसी में अनुवाद करवाया।

१४७० में इसके मरने के बाद काश्मीर में अधिक अराजकता रही, बजाय शासन के। १५४० में हुमायूँ के बन्धु मिर्जा हैदर ने काश्मीर को जीता। परन्तु १५५१ काश्मीर के प्रमुखों ने इसे गद्दी से उतार दिया। आखिर १५५५ में अकबर के समय, काश्मीर दिल्ली साम्राज्य में मिलाया गया।

महाभारत

यादवों के नाश का समाचार सुनते ही युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा कि उसका समय भी समीप आ गया था। इसलिए पाण्डव महाप्रस्थान के लिए उद्यत हो गये।

युधिष्ठिर ने युयुत्सु को बुलाया, उसे राज्य दिया, अपने राज्य का उत्तराधिकारी परीक्षित को बनाया। यादवकुलोद्धारक वज्र को इन्द्रप्रस्थ का राजा बनाया और उन सब की देखभाल करने के लिए सुभद्रा से कहा।

फिर उसने मृत यादवों के लिए तर्पण किया। मुनियों को दावत दी। समस्त दान करके, परीक्षित को कृपा का शिष्य बनाकर, सब वल्कल वस्त्र पहिनकर, महाप्रस्थान के लिए निकल गये।

उनको जाता देख, नागरिक बड़े दुःखी हुए। द्रौपदी के साथ पाण्डवों को जाता देख, कुछ को वह अरण्यवास याद हो आया, जो उन्हें जुये में हार जाने के बाद करना पड़ा था।

उनके पीछे बहुत-से लोग काफ़ी दूर तक गये, पर वे उनका निश्चय नहीं बदल पाये। वे वापिस चले आये। उनके साथ एक कुत्ता ही रह गया। उलूपि ने गंगा में प्रवेश किया। चित्रांगदा अपने पिता के घर चली गई।

पाण्डव पूर्व की ओर एक के पीछे एक चलने लगे। पहिले युधिष्ठिर, फिर भीम, अर्जुन और उनके बाद नकुल, सहदेव और उनके पीछे द्रौपदी। उसके बाद कुत्ता था।

अन्तिम पृष्ठ

तब पाण्डव दक्षिण की ओर गये और लवण समुद्र के उत्तरी तट पर कुछ दूर चलने के बाद, पश्चिम दिशा की ओर मुड़े। वहाँ उनको समुद्र में डूबी हुई द्वारिका नगरी दिखाई दी।

वहाँ से वे उत्तर की ओर गये। उन्होंने हिमालय देखा।

रास्ते में द्रौपदी यकायक गिर गई। भीम ने सामने चलनेवाले युधिष्ठिर से कहा—"भैय्या, द्रौपदी गिर गई है। वह किस दोष के कारण गिरी है?"

"द्रौपदी को अर्जुन से पक्षपात था। इसलिए वह गिर गई है।" युधिष्ठिर ने साफ़-साफ़ धीमे-धीमे कहा। परन्तु उसने पीछे मुड़कर न देखा।

फिर क्रमशः सहदेव, नकुल, अर्जुन और भीम गिर पड़े। सहदेव सोचता था कि उससे अधिक कोई बुद्धिमान न था, नकुल को अपने सौन्दर्य पर गर्व था। अर्जुन ने शेखी मारी थी कि वह सबको एक दिन में मार देगा। दूसरे धनुर्धारियों को वह कुछ न समझता था और भीम लोभी और घमंडी था....यह युधिष्ठिर ने बताया। आखिर युधिष्ठिर और उसका कुत्ता ही बच रहे।

अर्जुन ने अपने साथ गाण्डीव, अक्षय तुणीर रख रखे थे। वे जाते जाते लौहित्य समुद्र पहुँचे। वहाँ उनको, रास्ता रोके, अग्निदेव प्रत्यक्ष हुआ। "युधिष्ठिर, मैं अग्नि हूँ। तुम्हारे भाई अर्जुन को अपना गाण्डीव छोड़ना होगा। वह वरुण का है। चूँकि उससे काम हो गया है, इसलिए वह वापिस वरुण के पास पहुँचना चाहिए।"

जब अर्जुन ने अपने गाण्डीव और अक्षय तुणीर समुद्र में फेंक दिये, तो अग्निदेव अन्तर्धान हो गया।

तब इन्द्र रथ में आया और उसने युधिष्ठिर को रथ पर सवार होने के लिए निमन्त्रित किया।

युधिष्ठिर ने कहा कि जब तक उसके भाई और द्रौपदी साथ न आयेंगे, वह स्वर्ग नहीं आयेगा।

"वे वहाँ पहिले ही पहुँच गये हैं, तुम भी आओ।" इन्द्र ने कहा।

"यह कुत्ता, मुझ पर भरोसा करके, मेरे साथ ही आ रहा है। इसको भी स्वर्ग लाऊँगा।" युधिष्ठिर ने कहा।

इन्द्र इसके लिए नहीं माना। दोनों में वादविवाद हुआ।

तब यम ने जो तब तक कुत्ते के रूप में था, युधिष्ठिर की प्रशंसा की और कहा—"स्वर्ग में भी तुम्हारे समान कोई नहीं है, सप्राण स्वर्ग जाओ।" युधिष्ठिर रथ पर सवार होकर, स्वर्ग पहुँचा। वहाँ युधिष्ठिर को दुर्योधन तो दिखाई दिया, परन्तु उसको उसके भाई, बड़ा भाई कर्ण, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, अभिमन्यु आदि नहीं दिखाई दिये।

"पापी दुर्योधन के साथ में स्वर्ग नहीं चाहता। मैं वहीं जाऊँगा, जहाँ मेरे भाई और द्रौपदी हैं।" कहता, वह पीछे गया।

"स्वर्ग में आ गये, पर तुमने अपने पुराने सम्बन्ध नहीं छोड़े। तुम उन्हें छोड़कर मजे से स्वार्गिक सुखों का उपभोग करो।" नारद ने युधिष्ठिर को सलाह दी। पर युधिष्ठिर ने हठ किया कि वह भाइयों के पास ही जायेगा।

देवताओं ने कहा कि वैसा ही हो। एक देवदूत युधिष्ठिर को नरक की ओर ले गया। रास्ते में पापी थे। रास्ता भी अच्छा न था। ऊबड़-खाबड़ था। अन्धेरा। मच्छर और मक्खियाँ भिनभिना रही थीं।

जहाँ देखो वहीं कँकाल, छुरियों से पत्तेवाले पेड़, कहीं कहीं जलती रेत। कँकरीले पत्थरों के ढ़ेर।

"अभी और कितनी दूर जाना है?" युधिष्ठिर ने देवदूत से पूछा।

"यह रास्ता आपके लिए ठीक नहीं है। आइये, वापिस चले चलें।" देवदूत ने कहा। दुर्गन्ध के कारण, युधिष्ठिर का सिर फिर रहा था, वह भी दुःखी था। इतने में उनको आर्तनाद सुनाई दिया—"अरे, ज़रा दो क्षण रुको। वापिस न जाओ। तुम्हारे आने के कारण, अच्छी हवा आ रही है। कुछ आराम है। हमें दर्द नहीं मालूम हो रहा है।"

युधिष्ठिर ने वहीं खड़े होकर पूछा—"तुम कौन हो?"

"कर्ण, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रौपदी...." उत्तर मिले।

उन सबको वहाँ देखकर, युधिष्ठिर चकित हो गया। कहीं मुझे पागलपन तो नहीं चढ़ गया है—उसने सोचा। उसने देवदूत से कहा—"तुम जाओ। जिन्होंने तुम्हें भेजा है उनसे कहना कि मैं यहीं रहूँगा।"

दो क्षण बाद इन्द्र आदि, देवता युधिष्ठिर के पास आये। तुरत नरक के लक्षण गायब हो गये। देवताओं ने यह कह कर कि जो कम पाप करते हैं, वे थोड़ी देर तक नरक में रहते हैं—उनको उत्तम लोकों को बुलाकर ले गये।

युधिष्ठिर ने आकाश गंगा में स्नान किया। पवित्र होकर जब स्वर्ग में गया, तो उसने वहाँ कर्ण, अपने भाई, द्रौपदी, धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण, पाण्डु राजा के साथ कुन्ती और माद्री, विराट, द्रुपद, शिखण्डी आदि को देखा। [समाप्त]

[३४]

[भूत भगानेवालों के चुंगल से निकलकर केशव और उसके मित्रों ने भयंकर घाटी में जगभोजी और उसके शिष्य का सम्भाषण सुना। उनको मृगराज भी दिखाई दिया। घाटी के परे, ब्रह्मपुर का राजा भी सेना सहित आया हुआ था। वह अपने गुरु से यह परामर्श कर रहा था कि उस घाटी में कैसे प्रवेश किया जाय। बाद में—]

कुछ चर्चा के बाद ब्रह्मपुर के राजा ने कहा—"गुरुवर्य, अब तक जगभोजी शायद जान गया होगा कि हम आ रहे हैं, उस हालत में उसके घाटी छोड़कर भाग जाने का डर है।"

राजगुरु ने कुछ सोचकर सिर हिलाते हुए कहा—"महाराज, कोई ऐसी बात नहीं होगी। यह सोचना गलत है कि जगभोजी हमारे आने के बारे में बेखबर है। जंगल में कल्पकवल्ली को पकड़ने के समय जो बातें उसने कही थीं, उसकी सहेलियों ने साफ़ साफ़ सुना था। आगामी अमावस्या से पहिले उसकी दीक्षा समाप्त नहीं होगी। तब तक चाहे कुछ भी हो, वह इस भयंकर घाटी में ही रहेगा। यदि वह अन्तिम समय में भागना भी
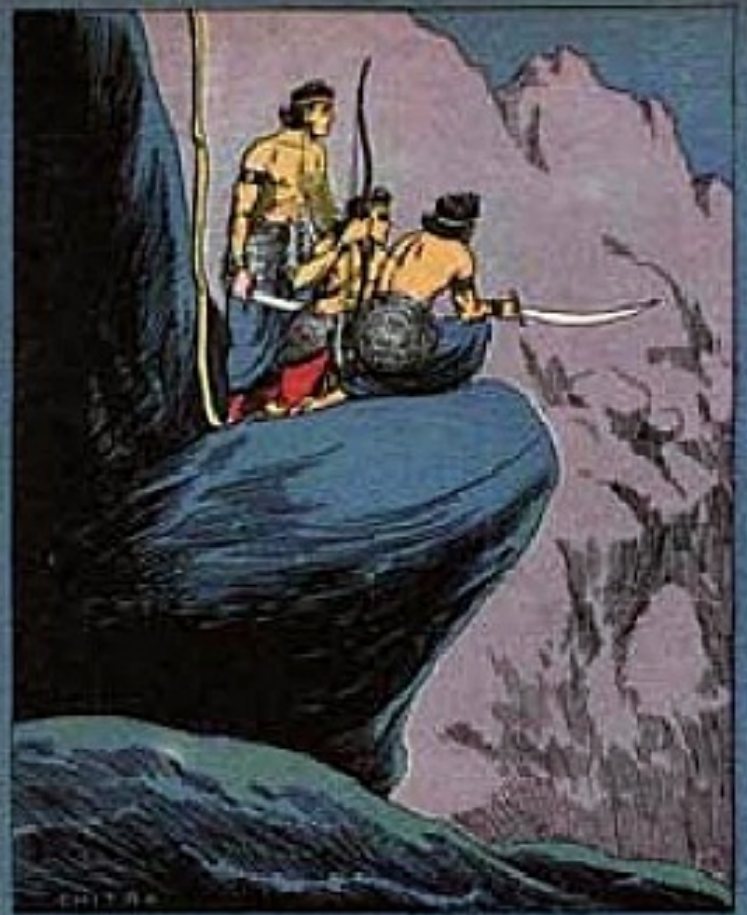
चाहे, तो बाहर जाने के सभी मार्गों पर हमारा पहरा है। गुरु मौनानन्द और जंगली गड़ेजंग, उसके प्रयत्न को सफल न होने देंगे।"

जैसा कि राजगुरु ने कहा था, गुरु मौनानन्द और जंगली गड़ेजंग ने भयंकर घाटी से जिस जिस रास्ते से भागा जा सकता था, उस उस रास्ते में पहरा रख रखा था। मौनानन्द के साथियों में मुख्य थे, बीड़ाली और श्वानकर्णी, और जंगली गड़ेजंग के साथियों में मुख्य था, नर माँस भक्षकों का नेता चण्डमण्डूक।

ब्रह्मपुर राजा के साथ इनके अलावा बड़ी सेना भी थी। उसमें गज और अश्व सेना भी थी। जंगली गोमान्ग जिस ध्वनि को सुन रहा था, वह हाथियों के गले में बंधी घंटियों की थी।

ज्यों ज्यों रात बीतती जाती थी, त्यों त्यों नीचे के पत्थरों पर बैठे केशव और उसके मित्रों को तरह तरह की आवाज़ें सुनाई पड़ती जाती थीं—चमचमाती चान्दनी में उनको नीचे की घाटी साफ़ दिखाई दे रही थी। जयमल घाटी की ओर कुछ देर तक ध्यान से देखता रहा। "केशव! इस चान्दनी में, यहाँ से इस घाटी में उतरना कोई उतना कठिन काम नहीं है। मेरा ख्याल है कि इस मृगराज को सवेरा होने से पहिले ही मारकर उसके चमड़े को पहिनना अच्छा है। सवेरे होते होते, शायद जगमोजी को मालूम हो जाये कि हम यहाँ हैं।

"जैसा तुम कह रहे हो, इस काम को जितनी जल्दी पूरा कर लिया जाय, उतना ही अच्छा है। मुझे यह सन्देह हो रहा है कि इस भयंकर घाटी के चारों ओर कुछ और लोग भी हैं, जो हमसे पहिले

इस घाटी में उतरना चाह रहे हैं। हम नहीं जानते कि वे शत्रु हैं, या मित्र।" केशव ने कहा।

फिर तीनों ने, जंगली गोमान्ग के पास जितने जहर-बुझे बाण थे उन्हें आपस में बाँट लिया। छोटे बड़े पत्थरों के बीच में से बेल की सहायता से घाटी में उतरे।

घाटी में सर्वत्र नीरवता थी। रह रहकर किसी पेड़ पर से कोई गण्डभैरण्ड पक्षी चिल्लाता। काले पेड़, उनकी काली छाया में चमचमाते जुगुनुओं के सिवाय कोई ऐसी चीज़ न थी, जिससे यह मालूम हो कि मृगराज कहीं यहाँ आसपास था।

"मृगराज, मेरा ख्याल है, यहीं कहीं हमारी ताक में बैठा है। इन पत्थरों के पास रहना खतरे से खाली नहीं है। वह जो ठूँठ दिखाई दे रहा है, उसकी ओर चलो।" कहते हुए जयमल्ल ने आगे दो कदम रखे।

उसी क्षण वे तीनों आश्चर्य के कारण स्तब्ध खड़े हो गये। देखते देखते वह पेड़, फल और पुष्पों से यकायक लद गया।

"केशव, हम जीत गये हैं, इस भयंकर घाटी की धनराशि हमारी है, कालभैरव

ने जो बातें तुममें प्रविष्ट होकर कही थीं, उनमें से एक सच निकल गई है। अब हमें यह मृगराज चाहिए।"

जयमल्ल अभी यह कह ही रहा था कि क्षण में यूँ बदलनेवाले पेड़ के पीछे से शेर का गर्जन सुनाई दिया। तुरत केशव ने बाण उठाकर उस तरफ़ निशाना लगाया। शेर पेड़ के पीछे से एक बार और गरजा, पंजा उठाकर केशव की ओर लपका। केशव ने जहर के बुझे बाण को शेर के दोनों आँखों के बीच में छोड़ा।

शेर एक बार गरजा और फिर चटाई के ढेर की तरह गिर गया। केशव, जयमल्ल और जंगली गोमान्ग भागे भागे गये और उसको पीठ और पैर पकड़कर उठाया। जयमल्ल ने दबी आवाज़ में कहा—"चुपचाप, जल्दी से जल्दी किसी गुफा में चलो। यदि जगमोजी को अभी मालूम हो गया कि हमने मृगराज को मार दिया है, तो खतरा है। जब केशव इसका चमड़ा निकालकर, पहिन लेगा तब हमें कोई खतरा नहीं है। वे तीनों मृत मृगराज को लेकर पास की गुफ़ा में जब पहुँचे, तो जगमोजी की कर्कश आवाज़ सुनाई दी। "शिप्पा! इस मृगराज के कारण मेरी निद्रा भंग हो रही है। न मालूम वह राजकन्या कितना कष्ट उठा रही है। क्यों यह गरज रहा है! किस पर!"

"सब सवेरे मालूम हो जायेगा। जो आवाज़ उसने अन्त में की थी, वह तो मामूली गर्जन-सा न था। ऐसा लगता था, जैसे गले में कहीं प्राण फड़ फड़ा रहे हों। अब आप आराम से सोइये। कल देख लेंगे।" किंकर ने कहा।

गुफा में थोड़ी देर में ही केशव जयमल्ल और गोमाग्न ने मिलकर शेर का चमड़ा निकाला। जयमल्ल ने उस चमड़े को केशव को कमर से ऊपर पहिनाया। जंगली गोमाग्न, केशव के इस नये वेश को देखकर उत्साह से चिल्लाया—"केशव, अब तुम्हारे रूप को देखकर भय हो रहा है और भक्ति भी उपज रही है। यदि कोशिश करो तो तुम हमारी जंगली जाति के सरदार हो सकते हो।"

"यह, प्रयत्न करने का अभी मौका नहीं है...." कहते हुए जयमल्ल ने एक बार गुफा से बाहर झाँककर देखा। "अब हमें बस यहाँ एक ही एक कार्य करना है। यह मालूम करना है कि कालभैरव का बताया हुआ पीपल का पेड़ और उसके नीचे की साँप की बाम्बी इस घाटी में कहाँ है!"

"हम इस निशान से पीपल के पेड़ को जान सकते हैं। वहाँ की धनराशि को भी क्या तुरत ही उखाड़ ले जायें!" जंगली गोमाग्न ने कहा।

जयमल्ल उसके प्रश्नों का जवाब न देकर कान खड़े करके सुनने लगा। दूर कहीं मनुष्यों के चलने की ध्वनि उसको सुनाई पड़ी।

"धन की बात बाद में। पहिले राजकुमारी को जगभोजी के चुंगल से छुड़वाना होगा। हम उनके राज्य के नागरिक हैं।" केशव ने जोश में कहा।

जयमल्ल ने केशव के पास आकर उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा—"केशव, ज़रा धीमे बात करो। मुझे सन्देह है कि इस घाटी में जगभोजी और उसके शिष्य के अलावा और भी कोई है। ज़रा ध्यान से सुनो, कहीं कोई आहट...."

जयमल्ल अभी कह ही रहा था कि दूरी से उसको किसी का पुकारना सुनाई दिया—"भाई जगभोजी, तुम कहाँ हो? मैं यहाँ वापिस आया हूँ। इस भयंकर घाटी में तुम्हारी आवाज़ और मृगराज का गर्जन सुनकर अपने कान ठीक करने आया हूँ। तुम दोनों की आवाज़ क्यों नहीं सुनाई देती?"

तुरत जगभोजी का उत्तर सुनाई दिया। "भाई कौन हो? ब्रह्मदण्डी ही हो क्या? अरे, कितने साल बाद वापिस आये हो?" केशव, जयमल्ल और जंगली गोमान्ना ने एक दूसरे का मुँह देखा। उनको ब्रह्मदण्डी की आवाज़ सुनकर भय और आश्चर्य हुआ। यानि ठीक समय पर यह दुष्ट भी घाटी में आ गया है। अब क्या किया जाय?"

ब्रह्मदण्डी, जगभोजी की गुफ़ा में पहुँच गया है, यह उनकी बातों से, जो उनको सुनाई पड़ रही थीं, जाना जा सकता था। एक दो मिनट बाद ब्रह्मदण्डी की आवाज़ कुछ ऊँची हुई। "भाई, तुमने ब्रह्मपुर की राजकुमारी कलाकवती को यहाँ उड़ाकर लाकर अच्छी आफ़त मोल ले ली है।
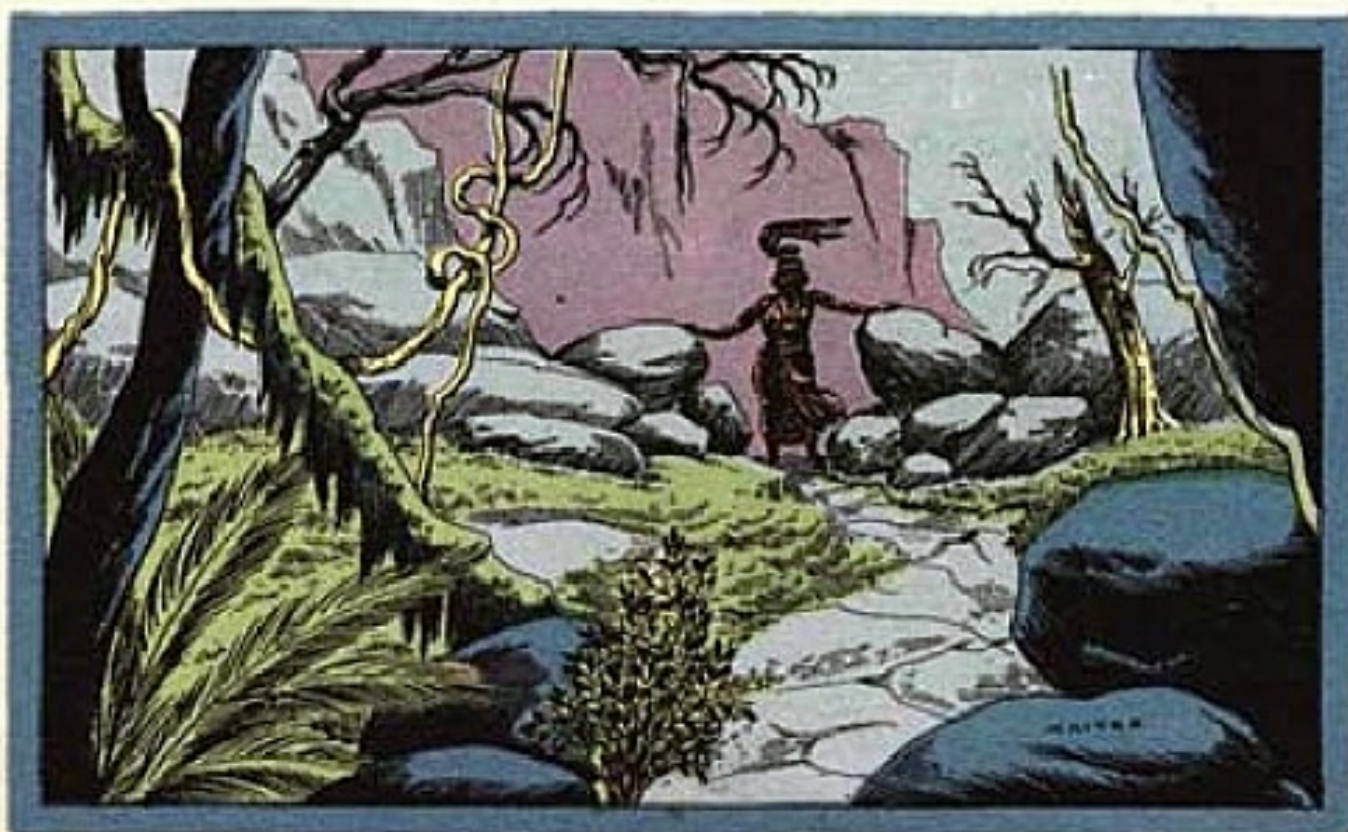
उसके पिता ने ब्रह्मपुर और कपिलपुर राज्य में रहनेवाली आदिम जातियों को जमा करके इस घाटी को घेर लिया है। मैं तुम्हारी मदद के लिए इस गरुड़ के मुखवाले एक आदमी के साथ एक गुप्त सुरंग में से चलकर यहाँ पहुँचा हूँ।"

"तुमने मेरे कुशल क्षेम के लिए जो प्रयत्न किये हैं, उन्हें देखकर मैं बड़ा सन्तुष्ट हूँ। हम दोनों ने इस घाटी में एक ही गुरु के पास पचीस छब्बीस साल मन्त्र विद्या का अभ्यास किया है। खैर, जिस काम पर तुम गये थे वह क्या हुआ?" जगभोजी ने पूछा।

जगभोजी के प्रश्न पर ब्रह्मदण्डी ने चीत्कार किया। "जिसे हम गुरु गुरु कहते आये हैं, न मालूम वह नीच कहाँ है। उसने मन देकर हमें मन्त्र-विद्या नहीं सिखाई। ब्रह्मपुर राज्य में एक पहाड़ी पर काल भैरव की प्रतिष्ठा की। हमें जिस आदमी की ज़रूरत थी, उसको हमने पकड़ा। उससे यहाँ मिलनेवाली धनराशि के बारे में कहलवाने की कोशिश की। परन्तु मेरा काम खतम होने से पहिले ही ब्रह्मपुर के राजगुरु ने अपनी मन्त्रशक्ति

से हम सब लोगों के मुख बन्द कर दिये।"

फिर जगभोजी और ब्रह्मदण्डी मिलकर घाटी में कुछ दूर गये। वहाँ पेड़ों के नीचे बैठे गरुड़ के मुँहवाले, स्थूलकाय और जित और शक्तिवर्मा से मिले। तभी पूर्व दिशा में कुछ कुछ उजाला होने लगा था।

"अब चलो, हम घाटी में निकले। मुझे मालूम है, वह पीपल का पेड़ और बाम्बी कहाँ है, जिसके नीचे धनराशि है।" कहते हुए जगभोजी ने रास्ता निकाला।

जगभोजी का ब्रह्मदण्डी से मिलकर गुफा छोड़कर जाना, शिष्य का राजकुमारी के पहरे पर रहना यह सब केशव और उसके साथियों ने देखा। उनको अन्धकार में एक गुफा के सामने शिष्य का इधर उधर घूमना भी दिखाई दिया।

जब वे तीनों उस जगह गये, जहाँ शिष्य पहरा दे रहा था, तो वह शिष्य गुफा के सामने रुका और गुफा में बैठी कल्पकवल्ली को सम्बोधित करके कहा—"हाँ, राजकुमारी! जब मैंने तुमको ब्रह्मपुर राज्य में एक सरोवर के पास देखा था, तभी मैं तुम पर मुग्ध हो गया था। तुम हमारे गुरु जगभोजी से प्रेम करके कैसे विवाह करोगी, यह मुझे नहीं मालूम हो रहा है। उसके दान्त सूअर के दान्त-से हैं। उसकी भौंहें भी कैसी टेढ़ी हैं, कितना बदसूरत है वह! कोई भी कन्या उससे कैसे विवाह कर सकती है! मुझे देखो। मेरे सिर पर जो पंख हैं, वे राजभैरुण्ड के हैं। उनको पाने के लिए जो मैंने साहस किया है...."

शिष्य ने बात बीच में ही बन्द कर दी, उसे ऐसा लगा, जैसे उसका दम घुट रहा हो, चूँकि केशव ने बेल का फन्दा बनाकर उसके गले में डालकर खींच दिया था।

"केशव, वह दम घुटकर कहीं मर न जाय। उससे हमें कुछ काम है। यह फन्दा ज़रा ढीला करो।" कहता जयमल्ल पत्थरों के पीछे से कूदा। केशव ने शिष्य के पास आकर उसके गले में पड़े फन्दे को ढीला कर दिया।

[अगले अंक में समाप्त]

यज्ञभंग

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम यह देख चिन्ता न करो कि जो तुमने करना शुरु किया था, वह निर्विघ्न नहीं चल रहा है। पुराने जमाने में बड़े बड़े महर्षियों के कामों में ही विघ्न आते थे। यह दिखाने के लिए, मैं तुम्हें श्वेतकेतु के यज्ञ के बारे में सुनाता हूँ।" उसने यों कहना शुरु किया।

अयोध्या के शासक सूर्यवंश के राजाओं में श्वेतकेतु था। उसके एक ही लड़की थी। उसके कुल गुरु वशिष्ठ ने सलाह दी कि वह यज्ञ करके देवी देवताओं को सन्तुष्ट करके पुत्र प्राप्ति के लिए प्रयत्न करे। इसके लिए श्वेतकेतु मान गया।

बेताल कथाएँ

यज्ञशाला बनवाई गई। यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री एकत्रित करके उसने यज्ञ की दीक्षा ली।

यज्ञ के पूर्ण होने तक, यज्ञशाला में किसी प्रकार की अपवित्रता नहीं होनी चाहिए। यदि कोई अपवित्रता हुई तो यज्ञभंग हो जाता है।

यह व्यवस्था की गई कि यज्ञ के प्रारम्भ से समाप्ति तक यज्ञशाला के पुजारी, पुरोहित, मन्त्रपाठी बाहर न जायें और बाहर के लोग अन्दर न आयें। यज्ञशाला के द्वार पर रात दिन पहरा रखा गया। फिर सब देवताओं की प्रार्थना की गई कि वे यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न करें।

यज्ञशाला के मन्त्रपाठियों में खण्ड नामका ब्राह्मण और उसका पुत्र भी था। यज्ञ अभी पूरा न हुआ था कि खण्ड के एक सम्बन्धी की आयु पूरी हो गई। तब चित्रगुप्त ने यम के पास आकर कहा—"इस मनुष्य की आयु पूरी हो गई है। यदि हम अब इसके प्राण लाये तो श्वेतकेतु द्वारा किये जा रहे यज्ञ में इसका एक सम्बन्धी खण्ड है इस लिए इस तरह यज्ञ में अपवित्रता आ जायेगी और यज्ञभंग हो जायेगा। एक और सप्ताह में यज्ञ पूरा हो जायेगा। तब तक खण्ड के सम्बन्धी को जीने देंगे।"

यम ने कुछ सोचकर कहा—"हमें यज्ञ भंग के बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है। हमें अपना काम करना होगा।"

चित्रगुप्त के भेजने पर यम के दूत, खण्ड के सम्बन्धी के प्राण ले आये।

खण्ड और उसके लड़के अपवित्र हो गये। खण्ड की पत्नी जानती थी कि वे श्वेतकेतु की यज्ञशाला में थे। यदि अपवित्र

उसका पति यज्ञ में उपस्थित रहा, तो यज्ञभंग हो जायेगा। यदि उसको मृत्यु का समाचार न दिया, तो उसको पाप लगेगा—यह सोचकर, खण्ड की पत्नी ने यज्ञशाला एक स्त्री द्वारा खबर भिजवाई।

यह नगर की ग्वालिन थी। वह यज्ञ के लिए घी ले जाया करती थी। उसने यज्ञशाला के बाहर खड़े पहरेदार को घी देकर कहा—"अन्दर खण्ड और उसके पुत्र हैं, ज़रा उनको एक बार बाहर बुला दोगे? उनसे एक बहुत ज़रूरी बात कहनी है।"

"अन्दरवाले, बाहर नहीं आ सकते? यह राजा की आज्ञा है।" पहरेदार ने कहा।

"तो उनसे कहो कि वे दोनों अपवित्र हो गये हैं। उनका एक सम्बन्धी मर गया है।" ग्वालिन ने कहा।

पहरेदार ने घबराकर कहा—"यदि तुमने ऐसी कोई बात कही, तो राजा तुम्हारा सिर कटवा देंगे।"

इसी समय यज्ञकुन्ड में कोई काली-सी चीज़ गिरी। अग्नि बुझ गई। बहुत सामग्री, घी डालने पर भी अग्नि न जली।

"अनर्थ, अनर्थ।" मन्त्रपाठी ज़ोर से चिल्लाये।

"तुम्हारे कारण कोई कमी हुई है।" राजा ने कहा।

"हमने, तो कोई कमी नहीं की है। पर क्या हुआ है, यह ज़रा ठंडे दिमाग से सोचा जाये।" वसिष्ठ ने कहा।

पूछताछ करने पर पहरेदार से यज्ञभंग का कारण मालूम हुआ। यज्ञशाला के मन्त्रपाठियों में खण्ड अपवित्र हो गया था। यह खबर पहरेदार तक तो पहुँची, पर अन्दर न आयी।

"जब तुम्हें यह खबर मालूम हुई थी, तब तुमने इसे अन्दर क्यों नहीं भिजवाया?" वशिष्ठ ने पहरेदार से पूछा।

"महाराजा की आज्ञा है कि बाहर की खबर कोई अन्दर न भेजी जाये।" पहरेदार ने कहा।

"हाँ, यज्ञभंग होगा, यह सोचकर, मैंने ऐसी आज्ञा दी थी। मेरे यज्ञ को देवताओं ने ही भंग किया है।" राजा ने कहा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा— "राजा, देवताओं ने श्वेतकेतु का यज्ञ क्यों भंग किया? क्या यम के लिए यह असम्भव था कि जिसकी आयु खतम हो गई हो, उसको एक सप्ताह जिला सके। यज्ञभंग न होने की जो देवताओं से प्रार्थना की गई थी, वह निरर्थक क्यों रही? यदि तुमने इन सन्देहों का जान-बूझकर उत्तर न दिया, तो तुरत तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"राजा ने स्वयं देवताओं से की गई प्रार्थना निरर्थक कर ली थी। यदि यज्ञ को निर्विघ्न चलाने का भार वह देवताओं पर ही छोड़ देता, तो शायद यम, खण्ड को अपवित्र न होने देता। परन्तु राजा ने यज्ञशाला को पवित्र रखने की व्यवस्था स्वयं करके, देवताओं को उस उत्तरदायित्व से निवृत्त कर दिया। यज्ञभंग का वास्तविक कारण स्वयं श्वेतकेतु था।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर चढ़ गया।

[कल्पित]

की प्रार्थना की। बाहर निकलने पर साँप ने भी उसकी प्रदक्षिणा की और वह भी चला गया। गंगाधर ने जब तीसरी बार कुँये में लोटा डाला, तो इस बार चूहे ने बाहर आने की प्रार्थना की। उसे भी उसने बाहर निकाला। चौथी बार कुँये में पड़े हुए आदमी ने उसको बाहर निकालने की प्रार्थना की। यद्यपि शेर ने सलाह दी थी कि उसे न निकालना, तो भी उसने उसको ऊपर निकाला और पानी निकालकर उसने अपनी प्यास बुझायी।

फिर कुँये से बाहर निकले हुए आदमी ने गंगाधर से कहा—"जी, मेरा नाम माणिक्यवर्मा है। मैं एक जौहरी हूँ। मैं उज्जयनी का हूँ। जो बातें उन पशुओं ने आपसे कही थीं, मैं उन्हें सुन चुका हूँ। उन बातों पर विश्वास न कीजिए। आप हमारे घर आकर, हमारा आतिथ्य स्वीकार करके जाइये।"

यह सुन गंगाधर ने सन्तुष्ट होकर कहा—"अब मैं काशी जा रहा हूँ। फिर कभी मौका मिलने पर आपके घर आऊँगा।"

वह वहाँ दस साल रहा। फिर उसने स्वदेश जाने की ठानी। जब अपने गाँव

का पीछा करता यहाँ आया था। दोनों इस कुँये में आ गिरे, वह भी इसी कुँये में कहीं है। इसी तरह एक चूहे का भी साँप पीछा करता आया। वे भी कुँये में हैं। उन दोनों को कुँये से बाहर निकाल लो, पर उस आदमी को न निकालना। वह दुष्ट है। चूँकि तुमने मेरी मदद की है, इसलिए जब कभी मुझे याद करोगे, मैं तुम्हारी मदद के लिए आजाऊँगा।" यह कहकर, वह चला गया।

गंगाधर ने फिर लोटा कुँये में डाला। उसमें पड़े साँप ने उसको बाहर निकालने

ग्रहबल

एक शहर में एक बड़ा ज्योतिषी था।

उसके एक लड़का था, जिसका नाम गंगाधर था। मरते समय ज्योतिषी ने गंगाधर को बुलाकर कहा—"बेटा, तुम्हारा भविष्य बताता हूँ, सुनो। सुनकर, जिस तरह अपना जीवन बनाना चाहते हो, उस तरह बनाओ। जन्म से दरिद्र हो। तुम्हारा घुमक्कड़ जीवन है। दुष्टों का उपकार करके प्रत्युपकार पाओगे। कुछ दिन के लिए जेल में रहोगे। तब तुम्हारे जीवन पर बड़ी आपत्ति आ सकती है। यदि तुम उससे बच गये, उसके बाद तुम सुखी रहोगे। राजभोग प्रारम्भ हो जायेगा।"

गंगाधर को अपने पिता के ज्योतिष में पूरा विश्वास था। जेल और आपत्ति की प्रतीक्षा करता, घर में क्यों बैठा जाये? दरिद्र के लिए सभी शहर अपने हैं। पिता ने बताया भी है कि मेरा घुमक्कड़ जीवन है। इसलिए गंगाधर काशी गया। गंगा के तट पर शिव का ध्यान करके, उसने कुछ पुण्य कमाने की सोची।

जब वह काशी के रास्ते में काफ़ी दूर चला आया, तो उसको रास्ते में प्यास लगी। उसे एक कुँआ दिखाई दिया। उसने साथ लाये हुए लोटे में रस्सी बाँधकर उस कुँये में उतारा। उस लोटे को कुँये में पड़े एक शेर ने पकड़ा। "भाई, मैं इसमें गिर गया हूँ। यदि तुमने मुझे ऊपर खींचा, तो तुम्हारा ऋण न रखूँगा।" शेर गिड़गिड़ाया।

उसका विश्वास करके, गंगाधर ने उस शेर को ऊपर खींचा। उसने गंगाधर की प्रदक्षिणा करके, कहा—"मैं एक आदमी

उसने गंगाधर से कहा—"आपको यदि जल्दी न हो, तो मुझे दो दिन दीजिये, मैं इसका पूरा मूल्य आपको दिलवा दूँगा।" गंगाधर इसके लिए मान गया।

अगले दिन जब गंगाधर नदी में स्नान के लिए गया, तो माणिक्यवर्मा मुकुट लेकर राजा के पास गया। "महाराज, मैं उस आदमी को पकड़ लाया हूँ, जिसने बड़े राजा की हत्या की थी। वह इस समय मेरे घर में ही है। उस के पास यह मुकुट था। देखिये तो।" उसने मुकुट दिखाया।

कुछ दिन पूर्व उस देश का राजा शिकार खेलने गया। वह वापिस न आया, जब उसके लिए खोज हुई, तो उसके खून से पुते कपड़े और शरीर के कुछ भाग निकले। राजा बुरी मौत मरा था। उसका लड़का राज्याभिषेक करके, राजा बन गया था।

गंगाधर जो मुकुट लाया था, वह मृत राजा का ही था। माणिक्यवर्मा ने सोचा कि यदि उस मुकुट को ले जाकर, राजा को दिया गया और उसके लानेवाले को पकड़वा दिया गया, तो हमेशा के लिए उसको राजा का आदर मिल सकेगा।

सच कहा जाय, तो बड़े राजा को शेर ने मारा था। पर यह राजा शेर के बारे में नहीं जानता था। यह सोचकर कि गंगाधर ने ही उसके पिता को मारा था, उसने गंगाधर की सुनवायी भी न की और उसे काल कोठरी में डलवा दिया। यह आज्ञा भी दी कि उसको बिना खाने पीने के मरने दिया जाय। माणिक्यवर्मा को ईनाम देकर, उसने भेज दिया।

सैनिक माणिक्यवर्मा के घर आये। गंगाधर को पकड़कर ले गये और उसे काली कोठरी में रख दिया।

जाते समय वह कुँआ आया, तो उसे शेर, साँप, चूहा याद हो आये। उसने यह परखना चाहा कि शेर की बात कहाँ तक सच थी। तुरत शेर एक मुकुट मुख में रखकर, वहाँ आया। उस मुकुट को गंगाधर को देते हुए उसने पूछा—"क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ!"

"कुछ नहीं, मैं केवल एक बार देखना चाहता था।" गंगाधर ने कहा। इसी तरह उसने साँप, चूहे को भी याद किया। वे भी आये। साँप ने उसको साँप द्वारा मारे गये लोगों को जिलाने की शक्ति दी। फिर वे दोनों चले गये। गंगाधर ने माणिक्यवर्मा को भी देखना चाहा। उसका आतिथ्य स्वीकार करके उसने शेर के दिये हुए मुकुट को भी उसे बेचने की सोची। मुकुट को कपड़ों में रखकर, वह उज्जयिनी में माणिक्यवर्मा के घर गया।

माणिक्यवर्मा ने गंगाधर का स्वागत किया। उसका खूब सत्कार किया।

गंगाधर ने जब वह मुकुट दिखाया, तो माणिक्यवर्मा ने तुरत राजा के आदर पाने का रास्ता सोचा।

गंगाधर न जानता था कि उसको काली कोठरी में क्यों रखा गया था। पर वह इतना जान गया कि माणिक्यवर्मा के धोखा देने पर ही उसकी यह गति हुई थी। इस स्थिति में उसकी कौन सहायता कर सकता था, सिवाय शेर, साँप और चूहे के? इसलिए गंगाधर ने उनको याद किया।

शेर शहर के बाहर तो आया, पर जेल के अन्दर न आ सका। न साँप और चूहा उसके पास आ सके। उन्होंने वचन दिया कि वे गंगाधर की जान न जाने देंगे।

फिर साँप और चूहे ने आपस में कुछ सलाह करके, राजा को सबक सिखाने की सोची। तब से उस राज्य में साँप और शेर का भय बहुत अधिक हो गया।

इस बीच कई हज़ार चूहे गंगाधर की कोठरी में सुरंग बनाकर पहुँचे। उस सुरंग में से, वे उसके लिए खाने पीने की चीज़ें पहुँचाने लगे। उस खाने को खाकर, गंगाधर आराम से जीने लगे।

ज्यों ज्यों समय बीतता गया, त्यों त्यों साँप के काटे से लोग और शेर के काटे से पशु मरने लगे। राजा इस महामारी को

न रोक सका। एक दिन राजा की बहिन रत्नमंजरी साँप के काटने से मर गई। राजा ने घोषणा करवायी कि जो कोई उसको जिला देगा, उसको आधा राज्य देगा और बहिन की शादी भी उससे कर देगा।

"रत्नमंजरी को मैं जिलाऊँगा।" काली कोठरी में से गंगाधर चिल्लाया। पहरेदार, जो इस ख्याल में थे कि उस कोठरी का आदमी कभी का मर गया होगा, राजा के पास भागे-भागे गये। "महाराज, जो आदमी बड़े राजा को मारने के कारण, जेल में डाला गया था, वह अब भी जीता है। वह चिल्ला रहा है कि वह उन लोगों को जिला सकता है, जिन्हें साँप ने काटा हो।"

राजा ने यह सोचकर कि जो इतने दिन बिना खाये पीये जीवित रह सका है, उसमें जरूर कोई महाशक्ति होगी। गंगाधर को अपने पास बुलवाया।

गंगाधर आया और ज्योंहि उसने रत्नमंजरी को छुआ, वह उठकर बैठ गई। तब गंगाधर ने जो कुछ हुआ था, वह राजा को बताया। जैसे चूहों ने उसे खिलाकर जीवित रखा था, वैसे ही मेरे छुटकारे के लिए साँप और शेरों ने राज्य में ऊधम मचाया हुआ था। उसने कहा कि मेरे छोड़े जाने पर उनका भय भी न रहेगा।

जैसा कि उसने कहा था, देश में साँप और शेरों का भय भी जाता रहा। राजा ने गंगाधर के साथ अपनी बहिन का विवाह ही न किया, बल्कि उसको अपनी घोषणा के अनुसार आधा राज्य भी दे दिया। इस तरह गंगाधर के बारे में, जो उसके पिता ने बताया था, वह सच निकला।

भिक्षा पात्र

एक शहर में साहु नाम का एक आदमी था। साहु का पिता कभी सम्पन्न था पर जब तक जीता रहा तब तक इधर उधर के कर्ज लेता रहा जब मरा तो सम्पत्ति से अधिक कर्ज़ छोड़ता गया। जो छोटे मोटे कर्ज़ थे उनको उसने पशु आदि बेच बाच कर दे दिये। जिसका सबसे अधिक कर्ज़ था उसे मय सारी चीज़ों के सारा मकान दे दिया। साहु अपने घर के पास की खाली जगह में, एक झोंपड़ी बनाकर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ उसमें रहने लगा।

पिता की सम्पत्ति में साहु केवल एक छोटा-सा चान्दी का लोटा ही कर्ज़दारों से बचा सका। यह लोटा साहु के बाबा का था। उसने चान्दी के लोटे में भीख माँग माँगकर, बड़ी सम्पत्ति बना ली थी। यह बात साहु को उसके पिता ने बतायी थी।

अब साहु के सामने भी सिवाय भीख माँगने के कोई और रास्ता न था। उसने बाबा के पात्र में भीख माँगने की सोची। चान्दी के लोटे पर कपड़ा लपेटकर वह भीख माँगने निकल गया। न मालम उस लोटे की भी क्या महिमा थी, क्षण में वह भर गया। दुपहर से पहिले साहु ने आधे बोरे से अधिक चावल घर पहुँचाये।

प्रति दिन इस प्रकार ही होता रहा। साहु के परिवार को किसी भी प्रकार की कमी न थी। खाकर जो बचता, उसे बेच-बाचकर वे ऊपर के खर्च भी निभा रहे थे। यह देख, उस साहुकार और उसकी पत्नी को, जो उसके घर में रह रहे थे,

एवेत सूद

आश्चर्य हुआ। उन्होंने अपने लड़कों को भेजकर जाना कि साहु के घर में कैसे गुज़ारा चल रहा था। उन्होंने अपने माँ बाप को बताया कि साहु का भिक्षा पात्र एक चान्दी का लोटा था।

यह जानकर साहुकार की पत्नी को बड़ा गुस्सा आया। उसने अपने पति से कहा—"यह चान्दी का लोटा हमें मिलना चाहिए था। हमारे कर्ज़ के बदले जब अपनी सारी सम्पत्ति दे दी थी, तो उसमें से चान्दी का लोटा रख लेना चोरी ही है न? तुम जाकर उस लोटे को ले लो।"

"जब कर्ज़ चुका दिया गया है, तब क्या किया जा सकता है!" साहुकार ने कहा।

"यदि वह मानता है कि लोटा उसका है, तो वह हमारा है। यदि नहीं कहता है, तो उसने इसे कहीं से चुराया है।" पत्नी ने कहा।

"मान भी लिया जाय कि साहु चोर है, तो इससे हमें क्या मिलेगा?" साहुकार ने कहा।

"चोरी का जवाब चोरी ही है।" साहुकार की पत्नी ने कहा।

उस दिन रात को उसने अपने लड़के को भिजवाकर वह लोटा उससे चुरवाकर मँगवा लिया, चूँकि साहु के झोंपड़े में दरवाज़े, खिड़की वगैरह न थे, इसलिए चोरी आसानी से हो गई। साहुकार और उसकी पत्नी ने देखा कि वह बढ़िया चान्दी का था। "उस साहु को फ़रियाद करने दीजिये कि यह लोटा उसका है।" साहुकार की पत्नी ने कहा। उस लोटे को अपने बिस्तरे पर रखकर वह सो गई।

जब वह सवेरे उठी तो भिक्षा पात्र को हाथ में लेकर उसने चारों ओर घर में

देखा। उसने झट पति को उठाकर कहा—"जी, जल्दी उठिये और भीख माँगने निकलिये। समय हो रहा है। यह हमारा घर नहीं है, हम किसी के घर आ गये हैं!"

साहुकार ने भिक्षा पात्र लेकर घर में इधर उधर देखकर कहा—"हाँ, हाँ, हम इस घर में क्यों हैं? घरवालों ने देखा, तो वे क्या सोचेंगे? बच्चों को लेकर, बाहर चबूतरे पर बैठो। मैं चार पाँच घर देख दाखकर अभी आता हूँ।"

शहर में खबर फैल गई कि साहुकार चान्दी का लोटा लेकर घर घर भीख माँगता आ रहा है। शहर के लोगों ने झुण्ड बनाकर उसको घेर लिया। "साहुकार जी! यह क्या काम है? आप पर क्यों भीख माँगने की नौबत आयी है?"

साहुकार इस प्रकार बोला, जैसे उसमें किसी दरिद्रदेवी ने प्रविष्ट कर लिया हो। "मेरे पास सिवाय इस लोटे के और कुछ नहीं है। यदि भीख न माँगूँ तो कैसे अपने बाल-बच्चों का पोषण करूँ? वे भूखे प्यासे किसी के घर के चबूतरे पर पड़े हैं। दया करके चार चार मुट्ठी आप भी अनाज दीजिये।"

कई ने सोचा कि साहुकार पागल हो गया था। कई ने जाकर देखा कि उसकी पत्नी और बच्चे बिचारे किसी के घर के सामने पड़े हुए थे। जब लोगों ने पूछा—"तुम्हारे पति कहाँ है?" तो उसने कहा—"भीख माँगने गये हैं।"

शहर के लोग यह न जान पा रहे थे कि यह क्या बात थी, साहु ने असली बात बता दी। हर रोज़ की तरह भीख माँगने के लिए मैंने भिक्षा पात्र को खोजा। पर बहुत खोजने पर भी वह न मिला। जब उसे मालूम हुआ कि साहुकार घर घर भीख माँग रहा था तो उसने देखा कि उसके हाथ चान्दी का लोटा था। वह साहुकार के पास भागा-भागा आया। वहाँ उसने जमा हुए लोगों से कहा—"यह ही मेरा भिक्षा पात्र है। मुझे नहीं मालूम कि यह साहुकार के हाथ में कैसे आया। जब रात को हम सोये थे तब भी यह हमारे साथ था, सवेरे देखा तो यह न था।"

क्या हुआ होगा, सब आसानी से अनुमान कर सकते थे। साहुकार बड़ा लोभी था। यह देख कि साहु का भिक्षा पात्र चान्दी का था, उसने उसे चोरी करवा लिया होगा। जो किया था, उसके लिए उसे अच्छा दण्ड मिला था, सब यह सोचकर सन्तुष्ट हुए। पाँच दस लोगों ने उसके हाथ से लोटा लेकर साहु को दे दिया।

साहुकार को तुरत आत्मज्ञान-सा हुआ। उसका सब के सामने खूब अपमान हुआ! वह उस दिन अपना रुपया पैसा लेकर, पत्नी बच्चों को लेकर एक और गाँव चला गया। शहरवाले साहु को फिर उसके अपने घर में ले गये।

जुलाहे की चतुराई

एक दिन जब एक राजा सिंहासन पर बैठा था, तो पड़ोस के देश के राजा के पास से एक दूत आया और उसने राजा के सिंहासन के चारों ओर खड़िया से एक घेरा बनाया और बिना कुछ कहे खड़ा हो गया। राजा ने अपने मन्त्रियों को बुलाकर पूछा—"इसका क्या अर्थ है?"

मन्त्री कुछ भी न कह सके। वे एक दूसरे का मुँह ताकते रहे। राजा ने क्रुद्ध होकर कहा—"ऐसे आदमी को खोजकर लाओ, जो इसका मतलब बता सके।"

मन्त्री खोजते-खोजते एक घर में आये। एक कमरे में, एक झूला, अपने आप झूल रहा था। छत पर धान सूखा हुआ था। उसको खाने के लिए पक्षी तैयार थे। परन्तु चूँकि नीचे एक पंखा चल रहा था, इसलिए वे धान के पास नहीं आ रहे थे। मन्त्री एक और कमरे में गये, वहाँ उन्होंने करघे पर बैठे, एक जुलाहे का देखा।

"घर में ये क्या आश्चर्य हैं! झूला स्वयं झूम रहा है। पंखा भी स्वयं चल रहा है।" उन्होंने कहा।

"मैं उनको चला रहा हूँ। करघे से मैंने एक रस्सी झूले से बाँध रखी है और दूसरी पंखे से।" जुलाहे ने कहा।

"आश्चर्य....आश्चर्य हम तुम्हें ही ढूँढ रहे हैं। हमारे सामने एक समस्या है। क्या तुम उसे सुलझा सकोगे?" मन्त्रियों ने पूछा।

"क्या है वह समस्या?" जुलाहे ने पूछा। मन्त्रियों ने उसको बताया। जुलाहे ने कुछ देर सोचकर कहा—"यह मेरे

आये बगैर नहीं सुलझायी जा सकती।" वह दो गोलियाँ लेकर, उनके साथ राजा के पास गया। जुलाहे ने राजा को प्रणाम किया। घेरे को देखा। दूत की ओर भी एक बार देखा। फिर वह जो गोलियाँ लाया था, उन्हें उसने उसके सामने फेंका।

तुरत दूत ने अपनी जेब से मुट्ठी-भर जौ उन पर फेंके। जुलाहा गया और एक मुरगे को लाकर उसने जौ के दानों पर छोड़ दिया।

उस मुरगी ने बिना एक दाना छोड़े सब दाने खा लिए। यह देख दूत तुरत बाहर निकल गया।

"यह सब क्या है! मैं कुछ भी समझ नहीं पा रहा हूँ।" राजा ने कहा।

"और कुछ नहीं, महाराजा! पड़ोस के राजा ने यह खबर भिजवायी थी कि वह हमारे राज्य को घेर लेगा। दूत यह जानने की प्रतीक्षा में था कि हम उसका मुकाबला करेंगे या हार मानते हैं। मैंने उससे कहा—"तुम तो गोलियों से खेलनेवाले छोकरे हो।" उसने यह दिखाने के लिए कि उनके पास बहुत बड़ी सेना है, बहुत-से जौ के दाने फेंके। मैंने मुर्गियों को छोड़कर यह बता दिया कि हम एक को भी नहीं छोड़ेंगे। यह सन्देश लेकर वह चला गया।" जुलाहे ने कहा।

"शाबाश....शाबाश, तुम सचमुच अक्लमन्द हो। तुम यहीं रह जाओ। मैं, तुम्हें अपना प्रधान मन्त्री नियुक्त करता हूँ।" राजा ने सन्तुष्ट होकर कहा।

"वाह....वाह, मुझे घर में इतना काम है। मुझे जाना है।" कहता, जुलाहा वहाँ से उठकर, घर चला गया।

संगीत विद्वान

कभी कूर्मद्वीप कलाओं के लिए प्रसिद्ध था। वहाँ हर किसी को संगीत, साहित्य, नृत्य, गान आदि में प्रवेश था। उस द्वीप में शर्वक नाम का एक युवक था। वह नृत्य, गान, कलाओं में प्रवीण था। चूँकि उससे पहिले ही दरबार में अनेक प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे इसलिए उसको राजा का आदर न मिल सका। जब उसने कुछ कीर्ति कमाकर, धन जमा करके, शादी करके, घरवाला बनने की कोशिश की, तो उसके लिए उसे मौका न मिला।

शर्वक का एक मित्र किसी द्वीप में व्यापार किया करता था। उसने बताया कि मराल द्वीप में यदि वह गया, तो उसका वहाँ अच्छा सम्मान होगा। वहाँ के लोग कला में बहुत पिछड़े हुए थे। राजा चाहे, कोई भी कलाकार आये, उसका सम्मान करता था। सलाह ही नहीं, वह मराल द्वीप जानेवाले एक जहाज़ में उसको ले भी गया।

वीणा के साथ ज्योंहि शर्वक मराल द्वीप में उतरा त्योंहि राजा के यहाँ खबर पहुँच गई कि कोई संगीत विद्वान आया था। उस द्वीप के वासी संगीत के बारे में कुछ न जानते थे। राजकर्मचारियों ने शर्वक के लिए सब सुविधाओं की व्यवस्था की। शर्वक से कहा गया कि वह उस दिन शाम को ही दरबार में आकर अपनी विद्या का प्रदर्शन करे।

"मुझे साथ बजाने के लिए कुछ आदमी चाहिए।" शर्वक ने कहा। राजा के जो आदमी आये थे वे यह भी न

देखा। उसने सोचा कि उसे कोई बीमारी थी और वह बीमारी रोज बढ़ती जाती थी।

उसने मन्त्री के कान में कहा—"देखो, यह पंडित कोई तार पकड़कर उसमें से कुछ निकालने की कोशिश कर रहा है और वह नहीं आ रहा है। यह मनुष्य कोई विचित्र बाधा में मरा जा रहा है। कहीं कहीं स्वर भी मन्द पड़ रहा है। दायें हाथ की अंगुलियाँ काँप रही हैं। बायें हाथ की अंगुलियाँ, तारों पर कुछ खोजती मालूम होती हैं। अच्छा है कि आप जल्दी ही हमारे वैद्य को बुलायें। विचारा कहीं से आया और यहाँ बीमार हो गया। यह शायद कोई छूत की बीमारी है। सभा में सब हिल रहे हैं। हाथ पैर हिला रहे हैं। उनकी हालत भी कोई खास अच्छी नहीं है।"

मन्त्री ने तुरत राज वैद्य को खबर भेजी। राज वैद्य ने एक क्षण शर्वक की ओर देखकर कहा—"पहिले उसके हाथ से वह चीज़ निकलवा लीजिये। तब ही बीमारी का कारण मालूम हो सकता है।"

राजा के सैनिकों ने आकर यकायक उसके हाथ से वीणा ले ली। शर्वक गाना

जानते थे कि साथ बजानेवालों का क्या मतलब था।

शर्वक अपनी वीणा लेकर राज सभा में गया। वहाँ कभी उन्होंने संगीत न सुना था। वह, उनको अपने संगीत से मन्त्रमुग्ध करने के उद्देश्य से वीणा बजाने लगा। जल्दी ही श्रोता संगीत का आनन्द लेते सिर हिलाने लगे। हाथ पैर हिलाते तन्मय हो गये। शर्वक अपने संगीत में मस्त हो गया।

केवल राजा ही संगीत के प्रभाव में न आ सका। उसने शर्वक को ध्यान से

संगीत विद्वान

कभी कूर्मद्वीप कलाओं के लिए प्रसिद्ध था। वहाँ हर किसी को संगीत, साहित्य, नृत्य, गान आदि में प्रवेश था। उस द्वीप में शर्वक नाम का एक युवक था। वह नृत्य, गान, कलाओं में प्रवीण था। चूँकि उससे पहिले ही दरबार में अनेक प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे इसलिए उसको राजा का आदर न मिल सका। जब उसने कुछ कीर्ति कमाकर, धन जमा करके, शादी करके, घरवाला बनने की कोशिश की, तो उसके लिए उसे मौका न मिला।

शर्वक का एक मित्र किसी द्वीप में व्यापार किया करता था। उसने बताया कि मराल द्वीप में यदि वह गया, तो उसका वहाँ अच्छा सम्मान होगा। वहाँ के लोग कला में बहुत पिछड़े हुए थे। राजा चाहे, कोई भी कलाकार आये, उसका सम्मान करता था। सलाह ही नहीं, वह मराल द्वीप जानेवाले एक जहाज़ में उसको ले भी गया।

वीणा के साथ ज्योंहि शर्वक मराल द्वीप में उतरा त्योंहि राजा के यहाँ खबर पहुँच गई कि कोई संगीत विद्वान आया था। उस द्वीप के वासी संगीत के बारे में कुछ न जानते थे। राजकर्मचारियों ने शर्वक के लिए सब सुविधाओं की व्यवस्था की। शर्वक से कहा गया कि वह उस दिन शाम को ही दरबार में आकर अपनी विद्या का प्रदर्शन करे।

"मुझे साथ बजाने के लिए कुछ आदमी चाहिए।" शर्वक ने कहा। राजा के जो आदमी आये थे वे यह भी न

जानते थे कि साथ बजानेवालों का क्या मतलब था।

शर्वक अपनी वीणा लेकर राज सभा में गया। वहाँ कभी उन्होंने संगीत न सुना था। वह, उनको अपने संगीत से मन्त्रमुग्ध करने के उद्देश्य से वीणा बजाने लगा। जल्दी ही श्रोता संगीत का आनन्द लेते सिर हिलाने लगे। हाथ पैर हिलाते तन्मय हो गये। शर्वक अपने संगीत में मस्त हो गया।

केवल राजा ही संगीत के प्रभाव में न आ सका। उसने शर्वक को ध्यान से देखा। उसने सोचा कि उसे कोई बीमारी थी और वह बीमारी रोज बढ़ती जाती थी।

उसने मन्त्री के कान में कहा—"देखो, यह पंडित कोई तार पकड़कर उसमें से कुछ निकालने की कोशिश कर रहा है और वह नहीं आ रहा है। यह मनुष्य कोई विचित्र बाधा में मरा जा रहा है। कहीं कहीं स्वर भी मन्द पड़ रहा है। दायें हाथ की अंगुलियाँ काँप रही हैं। बायें हाथ की अंगुलियाँ, तारों पर कुछ खोजती मालूम होती हैं। अच्छा है कि आप जल्दी ही हमारे वैद्य को बुलायें। बिचारा कहाँ से आया और यहाँ बीमार हो गया। यह शायद कोई छूत की बीमारी है। सभा में सब हिल रहे हैं। हाथ पैर हिला रहे हैं। उनकी हालत भी कोई खास अच्छी नहीं है।"

मन्त्री ने तुरत राज वैद्य को खबर भेजी। राज वैद्य ने एक क्षण शर्वक की ओर देखकर कहा—"पहिले उसके हाथ से वह चीज़ निकलवा लीजिये। तब ही बीमारी का कारण मालूम हो सकता है।"

राजा के सैनिकों ने आकर यकायक उसके हाथ से वीणा ले ली। शर्वक गाना

बन्द करके चकित हो गया। वैद्य ने जो कहा था वह ठीक ही निकला। कुछ मुँह तो लम्बा हुआ, पर संगीत विद्वान की दर्द जाती रही, सभासद भी सब मामूली आदमी हो गये।

राजवैद्य शर्वक को अलग ले गया। उसके सिर पर कोई तेल रगड़कर उसे सोने के लिए कोई औषधी दी। तुरत शर्वक सो गया। वैद्य ने उसकी नाड़ी की परीक्षा करके कहा—"कोई बात नहीं है। कल तक बिल्कुल ठीक हो जायेगा। परन्तु वह तार खतरनाक है। उसे समुद्र में फिकवा दीजिये।"

शर्वक वीणा के लिए सब जगह खोजता रहा, पर उसे वह कहीं मिली नहीं। परन्तु शर्वक ने जो गाना गया था, वह अन्तःपुर से सुनाई देने लगा। राजा जब घबराकर अन्तःपुर में गया तो राजकुमारी रमामणि वीणा बजाती गा रही थी। काफ़ी देर तक उसने शर्वक को गाते देखा, फिर वह उसी की तरह गाना सीख गई और हमेशा गाती रहती।

"बेटी, उसे तुरत फेंक दो। वैद्य ने बताया है कि उसके कारण बीमारी होती है।" राजा ने कहा।

"नहीं पिताजी, आप गल्ती कर रहे हैं। यह संगीत है। आपको संगीत कानों से सुनना चाहिए। आँखों से देखना नहीं चाहिए। मैं इस पंडित के पास संगीत विद्या सीखूँगी। यह भी मालूम कीजिये कि वे नाट्य विद्या जानते हैं कि नहीं!" राजकुमारी ने पूछा।

उसका इस प्रकार पूछने का भी एक कारण था। कुछ दिन पूर्व प्रवाल द्वीप का युवराज कन्यान्वेषण करता आया। उसने रमामणि को देखा। उसे देख सन्तुष्ट भी हुआ, पर यह जानकर कि वह संगीत नाट्य वगैरह न जानती थी, असन्तुष्ट होकर, चला गया।

शर्वक के उठने पर, जब उससे पूछा गया तो उसने बताया कि वह संगीत और नाट्य दोनों ही जानता था। राजा ने जो कुछ हुआ था उसके लिए माफ़ी माँगी। अच्छे वेतन पर उसको लड़की को संगीत सिखाने के लिए नियुक्त किया। रमामणि चूँकि काफ़ी तेज़ थी, छः महीने में ही संगीत और नृत्य दोनों में ही प्रवीण हो गई। प्रवाल द्वीप के युवराज को बुलवाकर उसके समक्ष रमामणि के संगीत और नृत्य विद्या प्रदर्शन की व्यवस्था की गई। वह बड़ा खुश हुआ। उसने उससे विवाह करना चाहा। उनके विवाह पर शर्वक को बहुत गुरुदक्षिणा मिली।

उसके बाद उसने अपने देश लौट जाना चाहा। परन्तु मराल राजा ने उसको जाने न दिया। उसे उसने अपने दरबार में ही नियुक्त कर दिया। जो कोई नृत्य और संगीत उस राज्य में सीखना चाहता, उसके सीखने के लिए सब प्रबन्ध कर दिये।

नेकी - बदी

एक गाँव में दो भाई थे। बड़ा धनी था और छोटा गरीब। जब दोनों एक बार मिले, तो छोटे ने बातों बातों में कहा—"जीवन क्रूर है। परन्तु बदी से अच्छी नेकी ही है।"

"बस करो, दुनियाँ में बदी के सिवाय और है ही क्या? नेकी करनेवाला कहीं का भी नहीं रहता।" बड़े भाई ने कहा।

"नहीं भाई, नेकी का फल अच्छा होता है।" छोटे भाई ने कहा।

"अच्छ तो खैर, यह बाजी रही, जो कोई तीन पहिले पहल मिलेंगे, उनसे पूछेंगे, यदि उन्होंने वही कहा, जो तुम कह रहे हो, तो जो कुछ मेरे पास है, मैं तुम्हें दे दूँगा और अगर उन्होंने वह कहा, जो मैं कह रहा हूँ, तो जो कुछ तुम्हारे पास है, वह मुझे दे देना।" बड़े भाई ने कहा।

"अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्जी।" गरीब भाई ने कहा। दोनों गली में निकल पड़े। उनको एक कुली दिखाई दिया। उन्होंने उससे पूछा—"जिन्दगी बसर करने के लिए क्या अच्छा है, नेकी या बदी?"

"दुनियाँ में कहाँ है नेकी! मुझे देखो। मैंने दिन-रात मेहनत की, मुझे क्या मिला? खाने के लिए भी काफ़ी नहीं है! फिर नेकी करके, जीने से अच्छा बदी करके जीना है।" जब भाई कुछ दूर गये, तो उनको एक व्यापारी दिखाई दिया। उन्होंने उससे पूछा कि नेकी से जीना अच्छा थ या बदी से।

उत्तम ओझा
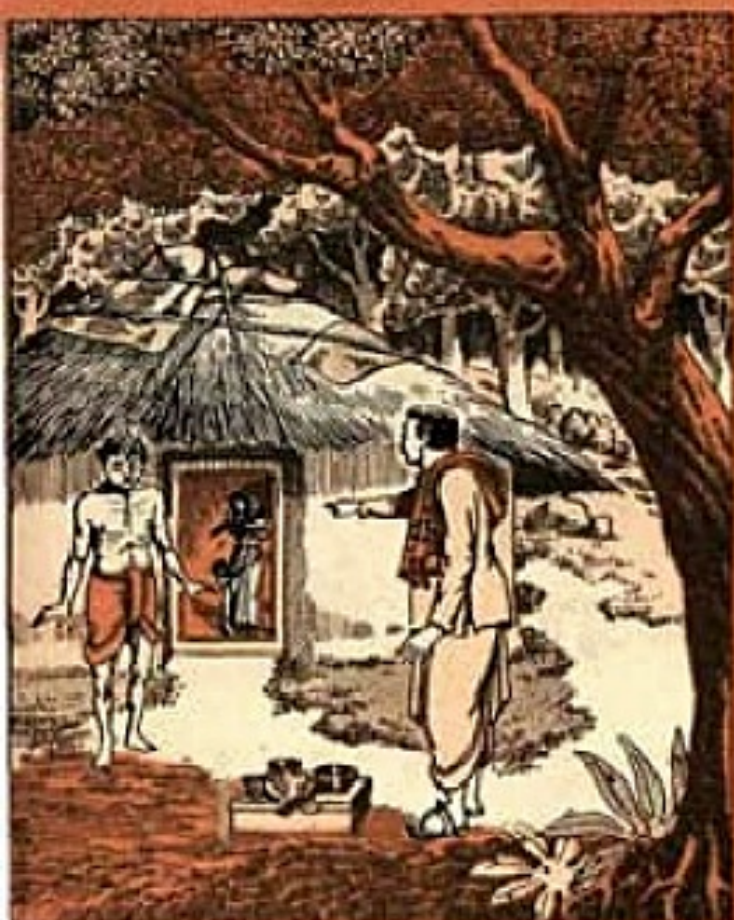
"क्या नेकी करके जी सकते हैं? एक चीज़ बेचने के लिए सौ झूट बोलने होते हैं।" कहकर व्यापारी आगे चला गया।

"देखा, दोनों की राय मेरी राय जैसी है।" बड़े भाई ने कहा। फिर उन्हें एक ज़मीन्दार दिखाई दिया। उससे भी उन्होंने यही प्रश्न किया।

"नेकी करके जीना? इस दुनियाँ में? बस भी करो। मैं हूँ....यदि मैं नेकी से जीने लगा तो........हूँ....खैर...." अपनी बात बिना पूरी किये, ज़मीन्दार आगे चला गया।

"भैया, सुना? चलो, अब घर वापिस चलें। चूँकि तुम शर्त में हार गये हो, इसलिए जो कुछ तुम्हारे पास है, वह मुझे दे दो।" बड़े भाई ने कहा।

उसने छोटे भाई की सब चीज़ें लेते हुए कहा—"चूँकि फिलहाल मुझे तुम्हारी झोंपड़ी से कोई काम नहीं है, इसलिए जब तक और जगह न मिल जाये, इसे रखो।"

गरीब पत्नी और बच्चे वगैरह झोंपड़ी में बैठे थे। उनके पास खाने को कुछ न था। बेचने के लिए भी कुछ न रह गया था। काम भी कहीं करने को नहीं मिल रहा था। जब भूख सही न गई, तो गरीब एक थैला लेकर, भाई के घर गया। "बच्चे भूख से तड़प रहे हैं। घर में एक दाना नहीं है। थैला-भर चावल या कुछ दलिया दो।"

"चावल कहाँ है, थोड़ा-सा दलिया है, पर क्या तुम अपनी एक आँख फोड़ने दोगे?" भाई ने पूछा।

"चाहो तो आँखें फोड़कर ही दलिया दो। तुम्हारी नेकी भगवान भूलेंगे नहीं।" छोटे भाई ने कहा। बड़े भाई ने छोटे भाई की आँख फोड़ दी और थैला-भर दलिया देकर भेज दिया। जब गरीब थैला लेकर घर

पहुँचा, तो उसकी पत्नी उसको देख फूट पड़ी। जो कुछ गुजरा था, उसने पत्नी को बताया, दोनों ने, कुछ रोज दलिया बनाकर, बच्चों को खिलाया और खुद थोड़ा खाया।

एक सप्ताह बीत गया। दलिया भी खतम हो गया। फिर उनको भूख सताने लगी। बिचारा गरीब और करता भी तो क्या करता, फिर अपने भाई के पास गया। भाई ने उसकी दूसरी आँख भी फोड़ दी और उसको एक थैला और दलिया दिया। भाई यद्यपि अन्धा हो गया था, तो भी वह जैसे तैसे घर पहुँचा।

उसकी पत्नी बड़ी रोयी धोयी। "बिना आँखों के कैसे जीओगे! अगर किसी और से माँगते, तो इतना दलिया वे भी दे देते।"

"क्यों रोती हो! दुनियाँ में कितने अन्धे नहीं जी रहे!" गरीब ने कहा।

जब दूसरी बार लाया हुआ दलिया भी खतम हो गया, तो गरीब ने अपनी पत्नी से कहा—"अब भाई के पास जाना बेकार है। अब जाने के लिए आँख भी नहीं है। मुझे ले जाकर गाँव से बाहर एक बड़े पीपल के नीचे बिठा दो। दिन भर वहीं बैठूँगा। आने जानेवाले कुछ न

कुछ देंगे ही। शाम को अन्धेरा होने के समय मुझे घर ले आना।"

उसको उसकी पत्नी बड़े पीपल के नीचे बिठाकर चली गई। राह पर आने जानेवालों ने उसे पैसा और खाने पीने की चीज़ें दीं। शाम हो गई। उसने घर जाना चाहा। पर पत्नी न आयी। उसने स्वयं जाने की ठानी। डंडा लेकर वह लड़खड़ाता निकल पड़ा। परन्तु वह रास्ता भटक गया। बहुत दूर चला, पर घर न आया। जब उसे पत्तों की आवाज आयी, तो वह समझ गया कि वह जंगल में पहुँच गया था। जंगल में, रात को जंगली जानवरों का भय अधिक था। इसलिए उसने एक बड़ा पेड़ ढूँढ निकाला। बड़ी मुश्किल से उस पर चढ़कर, चुपचाप बैठ गया। सवेरे तक उसने वहीं बैठे रहने का निश्चय किया।

आधी रात हो गई, कुछ पिशाच उस पेड़ के नीचे आये। पिशाचों के सरदार ने दूसरे पिशाचों से पूछा—"तुमने क्या क्या बड़े काम किये हैं?"

एक पिशाच ने कहा—"मैंने दो थैले दलिये के लिए, बड़े भाई से छोटी भाई की आँखें फुड़वादीं।"

"अच्छा है। पर वे ठीक की जा सकती हैं। यदि इस पेड़ के नीचे पड़े ओस को छोटे भाई की आँखों पर रगड़ा गया, तो उसकी आँखें फिर आ जायेंगी।" सरदार ने कहा।

"यह तभी न जब वह जानता हो!" पिशाच ने कहा।

एक और पिशाच ने कहा—"मैंने फलाना गाँव में एक बून्द पानी न रहने दिया। वे पानी के लिए छटपटा रहे हैं। उनको पानी के लिए दो कोस दूर जाना होगा। रास्ते में ही वे मर मरा जायेंगे।"

"सब ठीक है। पर इसका भी उपाय है। यदि उस गाँव के पास की पहाड़ी में पत्थर को अलग हटाया गया, तो उसमें से पानी ही पानी निकलेगा।" सरदार ने कहा।

"तब न जब इसे कोई जानता हो!" दूसरे पिशाच ने कहा।

तीसरे ने कहा—"फलाने देश के राजा की इकलौती लड़की को मैंने अन्धा बना दिया है। वैद्य उसे ठीक नहीं कर पा रहे हैं।"

"तेरा सिर! वह अन्धापन भी, इस पेड़ के नीचे के ओस के लगाने से ठीक हो जायेगा। इस बार तुम बड़े कार्य करो, और देखना कि उनको हटाने के इस प्रकार के उपाय न हो।" पिशाचों के सरदार ने कहा।

उनकी यह बातचीत ऊपर बैठा गरीब सुन रहा था। जब वह निश्चित रूप से जान गया कि पिशाच चले गये थे, तो सम्भलकर वह पेड़ पर से उतरा और वहाँ पड़े ओस के कणों को उसने आँखों पर लगा लिया। फिर उसकी दृष्टि यथापूर्व हो गई। उसने साथ एक दोने में ओस का पानी ले लिया। वह उस तरफ़ निकला
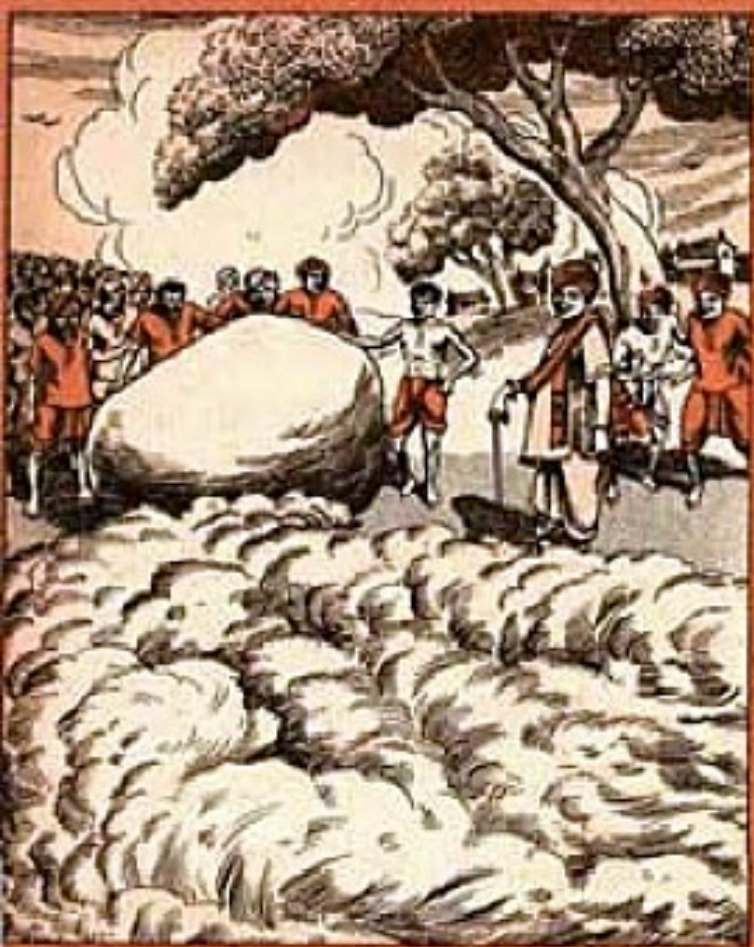
जहाँ पानी सूख गया था। रास्ते में उसे एक बुढ़िया, बेहंगी ले जाती हुई दिखाई दी।

"क्या थोड़ा-सा पानी पीने के लिए दोगे दादी?" उसने उससे पूछा।

"इस पानी को मैं दो कोस से ला रही हूँ। रास्ते में ही आधा छलक गया। हमारा घर बड़ा है और सारे घर के लिए इतना ही पानी है। पर प्यासे को कैसे पानी दिये बगैर रहा जाय! पीओ।" कहते हुए बुढ़िया ने उसको पानी दिया। "फिक्र न करो। जब मैं आऊँगा, तो तुम्हारे गाँव में, चाहो, जितना उतना पानी मिलेगा।" गरीब ने कहा।

बुढ़िया खुशी खुशी यह खबर गाँववालों को देने के लिए निकल पड़ी। गाँववाले सब उसका स्वागत करने आये। "भाई हमें पानी देकर पुण्य कमाओ।" उन्होंने कहा।

"इसलिए ही आया हूँ। इस गाँव के पास कोई पहाड़ी-सी है। मुझे वहाँ ले जाओ।" गरीब ने कहा। वहीं पहाड़ी-सी थी। गाँववालों ने मिलकर, मेहनत करके मुश्किल से उस चट्टान को हटा दिया। तुरत नीचे से पानी निकला और बहने लगा।

गाँववालों ने उसका इस तरह आदर किया, जैसे वह कोई भगवान हो। उसे बहुत-सा रुपया और चीजें दीं। यह जान कि वह कहीं दूर जा रहा था, उन्होंने उसे एक अच्छा घोड़ा भी दिया।

वह सीधा उस जगह गया, जहाँ कि राजकुमारी अन्धी हो गई थी। उसने राजा के पास खबर भिजवाई कि वह उसकी लड़की के अन्धेपन की चिकित्सा कर सकता था। कई ने राजा को सलाह दी कि उसे न बुलाया जाय, पर राजा ने उसको बुलाने के लिए आदमी भिजवा ही दिये।

गरीब, राजकुमारी के पास गया। दोने के ओस में उसने अपनी अंगुलियाँ भिगोयीं और राजकुमारी की आँखों को छुआ। वह फिर से देखने लगी। राजा के आनन्द की सीमा न थी। उसने उसको बहुत-सी वस्तु, वाहन और रुपये दिये। उन्हें लेकर, वह घर पहुँचा, तो उसकी पत्नी के सन्तोष और आश्चर्य की कोई हद न थी। जब वह शाम को अपने पति को घर लाने के लिए गई, तो वह पेड़ के नीचे न था। आँखें, तो थी नहीं, न मालूम वह कहाँ गया होगा। कैसे गया होगा! वह घबरा रही थी। और वैसा आदमी वापिस ही नहीं आया था बल्कि बहुत-से धन और आँखों के साथ आया था, इससे बढ़कर, आश्चर्य और आनन्द क्या हो सकता है!

यह बात सारे गाँव में फैली। सब उसका अभिवादन करने आये। उसने जो कुछ गुजरा था, सबको बताया। उसके भाई को भी लालच हुआ। वह भी उस दिन रात को पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। उनकी बातें सुनकर, उसने सोचा कि वह भी कुबेर हो जायेगा।

पर उस दिन पिशाच बहुत क्रुद्ध थे। "किसी दुष्ट ने हमारी बातें सुन लीं और जो बड़े काम हमने किये थे, वे सब बिगाड़ दिये, उसे पकड़ो। मारो।" पिशाच चिल्लाते चिल्लाते पेड़ के चारों ओर नाचने लगे। उनको पेड़ पर एक आदमी दिखाई दिया।

"हमारे भेद जानने के लिए फिर आये हो।" कहते हुए, उन्होंने उसको पकड़कर चीर फाड़ दिया।

अक़्लमन्द

उजबेकिस्तान में एक गरीब के तीन लड़के थे। पिता ने उनसे कहा—"बेटो! हमारे पास न पशु हैं, न सोना ही। इसलिए तुम ज्ञान सम्पत्ति कमाकर जीवन निर्वाह करो।"

पुत्र, पिता के कहे अनुसार ज्ञान पाने के लिए, हर चीज़ के अध्ययन करते बड़े हुए। कुछ दिन बाद उनका पिता गुज़र गया। वे अपना गाँव छोड़कर रोज़ी रोटी के लिए देश में घूमने लगे।

कुछ दिन घूमने फिरने के बाद उनको कुछ दूरी पर एक नगर दिखाई दिया। यह सोच कि उनको वहाँ कोई न कोई मिल ही जायेगा, वे उस नगर की ओर गये। रास्ते की ओर देखता सिर नीचे करके बड़ा लड़का चल रहा था कि वह झट रुका। उसने कहा—"कुछ देर पहिले इस तरफ़ से एक बड़ा ऊँट गया है।"

तीनों जब नगर की ओर कुछ दूर गये तो दूसरे ने कहा—"उसकी एक आँख अन्धी है।"

कुछ और दूर जाने के बाद तीसरे ने कहा कि उस पर एक औरत और एक बच्चा सवार थे। बाकी तीन ने उसके कथन का समर्थन किया।

वे जब कुछ दूर गये तो पीछे से एक घुड़सवार आकर उनसे मिला। उसने कीमती पोषाक पहिन रखी थी।

बड़े ने उससे पूछा—"ऐसा लगता है, तुम किसी चीज़ को खोज रहे हो? कहीं ऊँट को तो नहीं खोज रहे हो?"

मोहम्मद रज़ाक

"हाँ, ऊँट किधर गया है?" घुड़सवार ने पूछा।

"बड़ा ऊँट न?" बड़े लड़के ने फिर पूछा।

"हाँ, क्या तुमने उसे देखा है?" घुड़सवार ने पूछा।

"उसकी बाँयी आँख कानी है न?" दूसरे ने पूछा।

"उसपर एक स्त्री और एक बच्चा सवार हैं न?" तीसरे ने पूछा।

"हाँ, हाँ, तो यानि तुमने उसको देखा है? किधर गया है, बताओ।" घुड़सवार ने पूछा।

"हमने उस ऊँठ को देखा ही नहीं है?" भाइयों ने कहा।

उस घुड़सवार को, जो ऊँठ खो बैठा था, उनपर सन्देह हुआ। "बताओ, तुमने मेरे ऊँठ, उसपर मेरी स्त्री और बच्चे का क्या किया है? नहीं तो तुम्हें बादशाह के पास ले आऊँगा।"

"हमने न तुम्हारे ऊँठ को, न तुम्हारी पत्नी को, न लड़के को ही देखा है। अगर तुम इस दिशा में गये तो तुमको ऊँठ मिल सकता है।" भाइयों ने कहा।
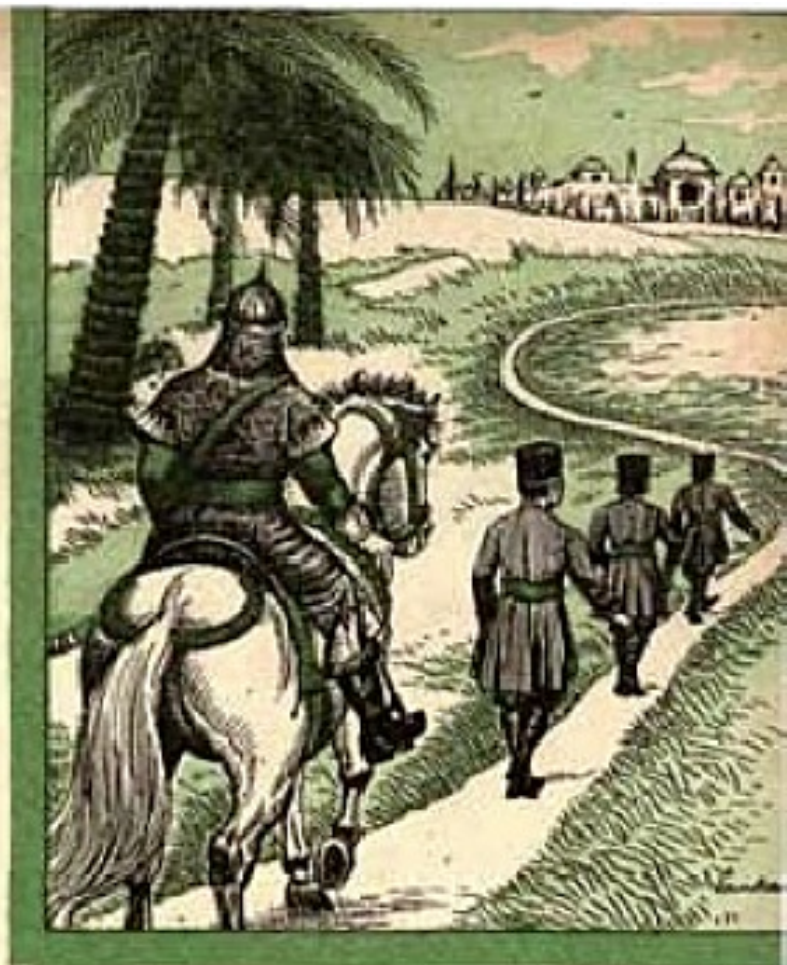
घुड़सवार ने सोचा कि वे उसको धोखा देना चाह रहे थे। उसने पूछा—"जब तुमने ऊँठ नहीं देखा है तब तुम कैसे जानते हो कि वह काना है, उसपर एक स्त्री और बच्चा सवार हैं? चलो बादशाह के पास।" वह उनको बादशाह के पास ले गया और उससे उसने फरियाद की कि उन्होंने उसकी पत्नी, बच्चे और ऊँट को चुरा लिया था।

"क्या सबूत है कि उन्होंने चुराया है?" बादशाह ने पूछा। "इन्होंने बताया है कि मेरा ऊँट बड़ा है। वह

काना है। उस पर एक स्त्री और एक बच्चा सवार हैं। फिर इन्होंने कहा कि इन्होंने कुछ देखा ही नहीं है। बिना देखे, ये यह सब कैसे जान सके!" ऊँट को खोनेवाले ने कहा।

"इस प्रश्न का क्या जवाब है!" बादशाह ने भाइयों से पूछा।

"हमने अपनी आँखों का उपयोग करके, हर चीज़ का बारीकी से अध्ययन करके, ये सब बातें जानी हैं। हम शुरु से इस विद्या का अभ्यास करते आये हैं।" भाइयों ने कहा।

"मैं अभी तुम्हारी विद्या की परीक्षा लेता हूँ।" बादशाह ने कहा। उसने वज़ीर के कान में कुछ कहा। वज़ीर ने एक बक्सा मँगवाया।

"इस बक्से में क्या है बताओ!" बादशाह ने भाइयों से पूछा।

"यह बक्स खाली है। इसमें कोई गोल-सी चीज़ है।" बड़े ने कहा।

"वह गोल-सी चीज़ अनार है।" दूसरे ने कहा।

"कच्चा अनार...." तीसरे ने कहा। बादशाह अपने आसन से उतरा। बक्से

का ढकन खोला और उसमें से उसने कच्चा अनार निकाला। सभा में उपस्थित लोग चकित रह गये। "ये चोर नहीं हैं, बड़े मेधावी हैं। वह ऊँट कहाँ चला गया है, तुम ही जाकर खोजो।" बादशाह ने फरियादी से कहा। भाइयों को अपने साथ भोजन के लिए ले गया।

"तुम्हारी बुद्धिमत्ता सचमुच आश्चर्यजनक है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुमने बिना देखे, कैसे ऊँट और उस पर सवार स्त्री, बच्चे का वर्णन किया!" बादशाह ने पूछा।

"रास्ते में ऊँट के पैरों के चिन्ह थे। वे मामूली ऊँट के पद-चिन्हों से बड़े थे। इसलिए मालूम हो गया कि उस तरफ़ कोई बड़ा ऊँट गया था।" बड़े ने कहा।

"उसने रास्ते में दायीं तरफ़ की घास को पकड़ा और बायें तरफ़ के घास को छुआ तक नहीं। इसलिए पता लगा कि उसकी दायीं आँख कानी थी।" दूसरे ने कहा।

"एक जगह वह ऊँट लेट गया, उस पर सवार लोग उतरे। जहाँ वे उतरे थे, वहाँ के रेत पर, एक स्त्री के पदचिन्ह और

बच्चे के पद चिन्ह थे। इस तरह मालूम हो गया कि ऊँट पर एक स्त्री और एक बच्चा सवार थे।" तीसरे ने कहा।

"तुमने जो कुछ बताया, वह सब ठीक मालूम होता है, तुम्हारी विश्लेषण शक्ति बहुत तेज़ है। परन्तु तुम यह कैसे बता सके कि बक्से में कच्चा अनार है। यह बताना, तो उतना आसान नहीं है।" बादशाह ने कहा।

"सुनिये। जिस तरह आपके लोग बक्से को लाये, उसी से जाना जा सकता था, कि बक्सा भारी न था। जब उसे रखा गया, तो एक तरफ़ तो वह ज़मीन से पूरी तरह छुआ, पर दूसरी तरफ़ नहीं। जब बक्से में किसी चीज़ के लुढ़कने की आवाज़ हुई, तो इससे यह पता लगा कि बक्सा खाली है और उसमें कोई गोल चीज़ है— क्योंकि गोल चीज़ ही उस तरह लुढ़क सकती थी।" बड़े ने कहा।

"उस बक्से को आपके अनार के बाग की ओर से ले गये हैं, तो उसमें सिवाय अनार के और गोल चीज़ क्या होगी!" दूसरे ने कहा।

"यह सब तो ठीक है। पर यह तुम कैसे जान सके कि वह कच्चा है, समझ में नहीं आ रहा है।" बादशाह ने कहा।

यह जानना ही सबसे अधिक आसान है। अनार कभी इस मौसम में नहीं होते हैं। चाहे, तो आप बाग में एक बार देखिये, तो। सभी कच्चे हैं, अभी एक भी नहीं पका है।" तीसरे ने कहा।

बादशाह उन तीनों की बुद्धिमत्ता पर बड़ा खुश हुआ और उनको अच्छे वेतन पर उसने नौकरी पर रख लिया।

रावण को यह जानकर बड़ा दुख हुआ कि हनुमान ने अक्षकुमार को मार दिया था। पर उसने दुख को संयमित करके क्रुद्ध हो, इन्द्रजित की ओर देखकर कहा—"तुम इन्द्र को जीतनेवाले वीर हो। ब्रह्मा से भी तुमने दिव्यास्त्र पाये हैं। तीनों लोकों में तुम-सा कोई योद्धा नहीं है। इस बन्दर ने सबको मार दिया है। जम्बुमालि को, मन्त्री के लड़कों को, पाँचों सेनापतियों को, तुम्हारे भाई अक्षकुमार को भी आखिर मार दिया है। यह जानकर कि उसका बल किस प्रकार का है, उससे लड़ना। जाकर शत्रु को जीतकर आ।"

इन्द्रजित पिता की प्रदक्षिणा करके धनुष आदि लेकर, रथ पर सवार हो युद्ध के उत्साह में हनुमान की ओर गया।

हनुमान ने उसको कुछ दूरी पर देखा। सिंह निनाद करके उसने अपना शरीर बढ़ाया। फिर दोनों युद्ध में जूझ उठे।

इन्द्रजित युद्ध के लिए सन्नद्ध ग्यारह हज़ार योद्धाओं से युद्ध कर सकता था। परन्तु हनुमान उसके बाणों से बचता आकाश में विचरने लगा।

बहुत देर युद्ध करने पर भी न हनुमान इन्द्रजित के हाथ आया, न इन्द्रजित ही हनुमान के। अपने बाणों को व्यर्थ जाता
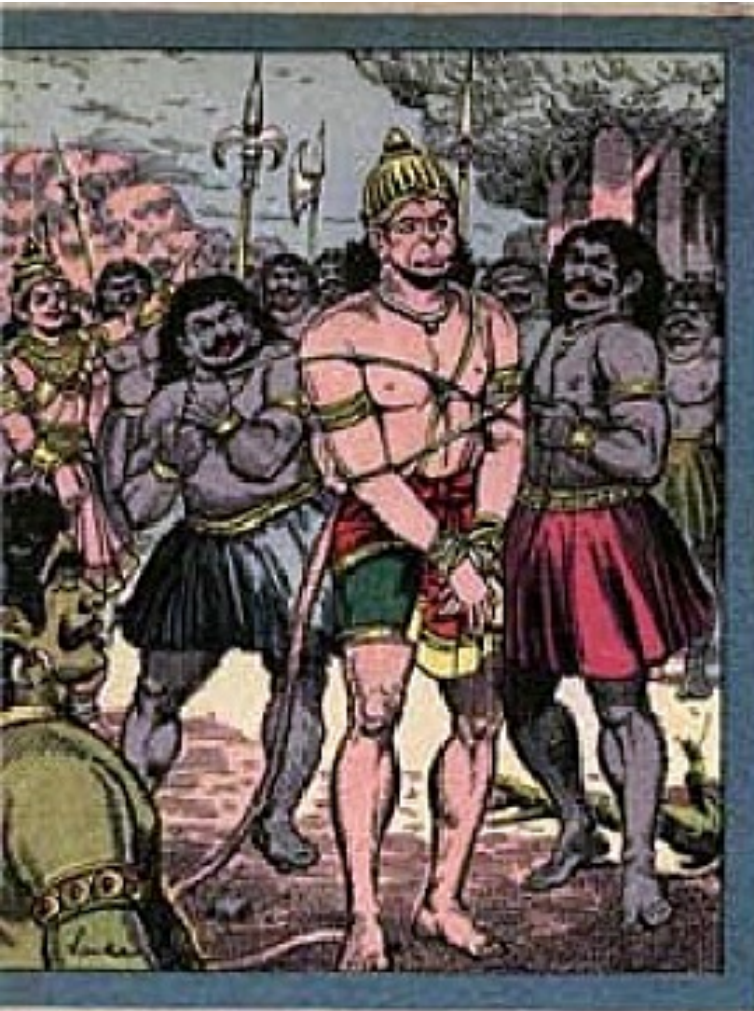
देख इन्द्रजित ने सोचा कि इसको मारना असम्भव है, किसी तरह इसको पकड़ा जाये। यह सोच उसने ब्रह्मास्त्र का उपयोग किया। उसके कारण हनुमान पकड़ा गया, उसकी हालत ऐसी हो गई कि वह हाथ पैर भी न हिला सका। उसे तब वह वर स्मरण हो आया, जिसे ब्रह्मा ने कभी उसे दिया था। ब्रह्मा ने उसको वर दिया था कि उसपर किसी भी अस्त्र का प्रभाव न होगा। यद्यपि उसको ब्रह्मास्त्र लगा था, तो भी उसका ख्याल था कि ब्रह्मा, देवेन्द्र, वायुदेव उसकी रक्षा कर रहे होंगे। उसने राम से बातचीत भी करनी चाही।

हनुमान के पास राक्षस आये और उन्होंने उसको रस्सियों से बाँध दिया। उसको रस्सियों से बाँधते ही ब्रह्मास्त्र का प्रभाव जाता रहा। इन्द्रजित यह जानता था, इसलिए वह बड़ा डरा, चूँकि हनुमान इन रस्सियों को बड़ी आसानी से तोड़ सकता था। जिस पर ब्रह्मास्त्र छोड़ा हो, उसपर कोई और अस्त्र नहीं छोड़ा जा सकता था। इसलिए हनुमान अब लंका को कितनी ही हानि पहुँचा सकता था।

परन्तु हनुमान यह न जानता था, वह यह भी न जानता था कि रस्सियों से बाँधे जाने के बाद ब्रह्मास्त्र का प्रभाव भी समाप्त हो गया था।

इस बीच, राक्षस हनुमान को खूब मारते पीटते रावण के पास खींचकर ले गये। इन्द्रजित ने सभा में हनुमान को दिखाकर कहा—"यह ही है वह वानर।"

उपस्थित राजप्रमुख आपस में पूछने लगे—"कौन है यह वानर! यहाँ क्यों आया है! किसके भेजने पर आया है! किसको देखने आया है!" कुछ और

वैभव को देखकर चकित रह गया। उसे लगा कि इस रावण को देखकर यदि तीनों लोक भयभीत हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

इतने में रावण की प्रेरणा पर, प्रहस्त ने हनुमान से इस प्रकार कहा :—

"वानर, तुम डरो मत। तुमको किसने भेजा है? दिक्पालकों ने? या विष्णु ने? चाहे किसी ने भी भेजा हो, हम तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ेंगे। सच बताओ, हम तुम्हें छोड़ देंगे। तुम देखने में तो बन्दर दिखाई देते हो, पर तुम्हारा प्रभाव बहुत अधिक मालूम होता है। झूट बोलोगे तो तुम्हारी जान नहीं बचेगी। यदि तुम स्वयं आये हो तो बताओ कि क्यों आये हो?"

प्रहस्त के यह पूछते ही हनुमान ने रावण की ओर मुड़कर कहा—"मुझे इन्द्र, कुबेर, वरुण और यम ने नहीं भेजा है, न विष्णु ने ही। मैं जन्म से ही वानर हूँ। यह मेरा कोई नकली रूप नहीं है। क्योंकि तुम्हें देखना आसान नहीं है, इसलिए ही मैंने अशोक वन को नष्ट किया। तब मुझ पर बलवान राक्षसों ने

राक्षसों ने कहा—"इस वानर को मारकर भून दो, खायेंगे।"

हनुमान ने सामने आकर रावण के नीचे बैठे वृद्ध मन्त्रियों और मणियों से अलंकृत सभाभवन को देखा। रावण ने हनुमान को राक्षसों द्वारा रस्सियों से इधर उधर खींचते देखा। उसकी आँखें क्रोध में अंगारें हो गईं। हनुमान को देखकर अपने मन्त्री को आज्ञा दी—"मालूम कीजिये, आखिर इसकी बात क्या है?"

हनुमान रावण, उसके मन्त्री दुर्धर, प्रहस्त, महापार्श्व, निकुम्भ, रावण के अत्यन्त

हमला किया और मैंने आत्मरक्षा में उनको मार दिया। ब्रह्मा के वर के कारण मुझपर किसी भी अस्त्र का असर न हुआ। परन्तु तुम्हें देखने की इच्छा से मैंने अपने को ब्रह्मास्त्र से प्रभावित होने दिया। तुमसे मुझे कुछ राजकीय कार्य भी है। मैं राम का दूत हूँ। तुमसे कुछ हितकर बातें कहूँगा। सुनो। इन बातों को सुग्रीव ने मुझ से कहने के लिए कहा है। दशरथ का लड़का राम अपनी पत्नी, सीता और भाई लक्ष्मण के साथ पिता की आज्ञा पर दण्डकारण्य आया। वहाँ राम की पत्नी सीता गुम हो गई। राम सीता को खोजता ऋष्यमूक पर्वत पर सुग्रीव से मिला। फिर उन्होंने वाली को मारकर सुग्रीव को वानर और भल्लूकों का राजा बनाया। इसके बदले में सुग्रीव ने वचन दिया कि वह सीता की खोज करवा देगा। उस वचन के अनुसार उसने सब दिशाओं में वानरों को भेजा। उनमें से मैं एक हूँ। वायुपुत्र हूँ और मेरा नाम हनुमान है। मैं सौ योजन समुद्र को पार करके सीता को देखने आया हूँ। मैंने सीता को यहाँ तुम्हारे पास देखा। तुमने कितनी ही तपस्या की है, धर्म जानते हो, यह काम तुम्हें नहीं शोभता। राम का अपकार करके, उसका प्रतिफल पाये बगैर रहना किसी के लिए सम्भव नहीं है। राम आगे क्या करेंगे, वह मैं नहीं जानता। सीता को राम को वापिस दे देना तुम्हारे लिए श्रेयस्कर है। यह सच है कि तुम कई जातियों द्वारा नहीं मारे जा सकते, परन्तु सुग्रीव उन जातियों से सम्बन्धित नहीं है। वह वानर है। नर राम से और वानर सुग्रीव के हाथ तुम्हारी मौत निश्चित है। राम मानेंगे नहीं, नहीं तो मैं

अकेला ही तुम्हारी लंका का नाश कर सकता हूँ। जब तुमने सीता का अपहरण किया था, तभी तुमने अपने गले में मृत्यु देवता को लपेट लिया था। मैं दूत हूँ। न मैं मनुष्य हूँ। न राक्षस ही हूँ। इसलिए तुम्हारे हित की बात कर रहा हूँ। राम से शत्रुता करके, तुम जीवित नहीं रह सकते। यह जान लो।"

ये बातें सुनकर रावण ने क्रुद्ध होकर, हनुमान को मार देने की आज्ञा दी। तब विभीषण ने अपने भाई को रोकते हुए यूँ कहा—"दूत को मारना राजधर्म के विरुद्ध है। क्रोध में धर्म विरुद्ध कार्य करना ठीक नहीं है। यह दूत ही नहीं है, चूँकि इसने अक्ष आदि को मारा है, इसलिए शत्रु ही है। फिर भी दूत के रूप में आये हुए व्यक्ति के लिए अलग दण्ड है। उसका अंग भंग किया जा सकता है, कोड़े से मारा जा सकता है। सिर मुँड़वाया जा सकता है। जलाकर छाप लगाई जा सकती है। परन्तु मारा नहीं जा सकता। धर्म न छोड़िये, इसको मारने से हमारा कोई लाभ भी नहीं है। जिसने इसको भेजा है, उसको मारो।"

यह बात रावण को जंची। "हाँ, दूत है, इसलिए न मारना ही ठीक है। कोई और दण्ड दिया जाय। बन्दरों को पूँछ प्यारी होती है। इसलिए इसकी पूँछ जलाकर भेज दो। फिर इसे जगह जगह गलियों में घुमाओ।"

राक्षस, हनुमान की पूँछ पर चीथड़े लपेट कर तेल डालकर, चारों गलियों में घुमाते चिल्लाये—"पागल को देखो।"

हनुमान ने इसकी परवाह न की, उसने सोचा कि इस तरह नगर देखकर कहाँ

कहाँ रक्षा का क्या प्रबन्ध था, देखा जा सकता था, उसे देखने के लिए राक्षस स्त्रियाँ और बच्चों का जमघट-सा लग गया।

कुछ राक्षस स्त्रियों ने सीता के पास जाकर कहा—"जो वानर, तुमसे बात करके गया था। उसकी पूँछ जलाकर उसको सारे शहर में चिल्ला चिल्लाकर घुमाया जा रहा है।"

सीता यह सुनकर बड़ी दुखी हुई। "यदि मैं पतिव्रता हूँ, तो हनुमान सुरक्षित रहे।" सीता ने प्रार्थना की।

सीता के यह कहते ही हनुमान की पूँछ की ज्वाला और भी चमकने लगी। परन्तु हनुमान को आग न लगी। यह देख हनुमान को आश्चर्य हुआ। उसको जो कुछ करना था, उसके बारे में सोचा। उसने पहिले बहुत छोटा बनकर अपने बन्धन ढीले कर लिये। फिर उसने अपना शरीर बड़ा किया और नगर द्वार के पास के खम्भे को उठाकर आस पास के राक्षसों को खूब मारा। फिर उसने नगर की ओर देखकर सोचा—"अब क्या किया जाय!" उसने तब तक लंका नगरी का काफ़ी नुक्सान कर दिया था। लंका के किले का नाश करना ही बाकी रह गया था। लंका के महाभवनों को अपनी पूँछ की आग से जलाकर अग्नि को आहुति दे देना ही उसने अपना कर्तव्य समझा।

यह सुनकर हनुमान लंका के बड़े बड़े भवनों पर अपनी जलती पूँछ घुमाने लगा निर्भय हो राक्षसों के घरों में गया। प्रहस्त के घर में आग जलाकर महापार्श्व के घर पर कूदा। उसके घर को जलाकर इन्द्रजित, जम्बुमालि, सुमालि आदि के घर जला दिये। सिवाय विभीषण के घर के उसने

बाकी राक्षसों के घर, उनकी सम्पत्ति, धन वगैरह सब राख कर दिये। लंका को जलाने में वायुदेव भी हनुमान की सहायता कर रहा था। लंका और भी तेज़ी से जलने लगी।

अपने जलते घरों को राक्षस नहीं बचा सके। पुरुष, स्त्री, बच्चों की बुरी हालत हो गई। कितने ही आग में मारे गये। जलती लंका भयंकर माल्म हो रही थी। राक्षसों के आर्तनाद से यह दृश्य और भी भयंकर हो गया।

हनुमान ने एक बार लंका की ओर देखा। नगर के सभी प्रान्तों को जलता देख, अपनी पूँछ उसने समुद्र में डुबोई।

उस समय उसको एक भयंकर सन्देह सताने लगा। कहीं लंका के साथ सीता तो नहीं जल गई है? यह ख्याल आते ही हनुमान अपने को कोसने लगा। उसने सोचा कि शायद क्रोध में मनुष्य कर्तव्य और अकर्तव्य में विचक्षण नहीं कर पाता। जिस काम पर आया था, वह सब खराब हो गया है।

पर इतने में उसको धीरज हुआ। जब जिस काम पर मैं आया था, उसमें इतनी सफलता मिली है, तो सीता का जल जाना नहीं हो सकता। क्या वह अग्नि, जिसने मेरी पूँछ जलाई है, सीता को भस्म करेगी? यह कभी न होगा, सीता अग्नि-सी है। उसका अग्नि क्या बिगाड़ सकती है? वह यह सोच ही रहा था कि आकाश ने उसको चारणों की बातें सुनाई दीं। यह जानकर लंका के जल जाने पर भी, सीता सुरक्षित थी, वह बड़ा आनन्दित हुआ।

पितृ-सम्पत्ति

पन्नालाल की पत्नी गर्भवती थी। जब वह उसे मायके में छोड़कर, अपने घर वापिस आ रहा था, तो उसे एक झोंपड़ी में से किसी का कराहना सुनाई दिया—"अरे भगवान। क्या मेरी मौत यूँहि बदी थी!" पन्नालाल तुरत झोंपड़ी में गया। एक बूढ़ा एक टूटी फूटी खाट पर पड़ा पड़ा कराह रहा था। "क्या बात है!" पन्नालाल ने उस वृद्ध से पूछा।

"कौन हो भाई! भगवान की तरह आये हो! मेरा समय ही आ गया है। आँख बन्द करने से पहिले मैं अपने लड़के को देखना चाहता हूँ।" बूढ़े ने कहा।

"अगर आपका लड़का नहीं है, तो मैं हूँ न। क्या चाहते हैं आप! क्या बीमारी हैं आपको!" पन्नालाल ने पूछा।

"अरे बीमारी, तो उम्र के सिवाय कुछ नहीं है। भूख लग रही है। प्यास है। कुछ पानी दो। मर रहा हूँ। इसका मुझे कोई दुःख नहीं है। परन्तु मैं अपने लड़के को एक बार देखना चाहता हूँ। यह ज़रूरी है।" बूढ़े ने हाँफते-हाँफते कहा।

पन्नालाल ने झोंपड़ी के चारों ओर देखा। कहीं पानी न था। खाने को तो कुछ था ही नहीं। वह आसपास के पाँच-दस घरों से खाने पीने के लिए ले आया। खाना खाकर, पानी पीकर, बूढ़े की हालत कुछ सुधरी।

"बेटा, इस जन्म में न सही, तो किसी और जन्म में तुम मेरे लड़के रहे होगे। यदि तुम मेरे लड़के को भी ले आये, तो जन्म जन्म तक तुम्हारा ऋण न

देखनेवाला नहीं है। भीख माँगकर, जिन्दगी बसर कर रहे हैं। आजकल खाट पर पड़े तुम्हें देखने के लिए छटपटा रहे हैं। तुम आकर दो-चार दिन उनकी सेवा शुश्रूषा करके, अपना कर्तव्य निभाओ।" पन्नालाल ने गौतम से कहा।

गौतम ने ये बातें सुनीं और खिझकर कहा—"छी, छी, यह भिखारी न मालूम कौन है और तुम कह रहे हो कि वह मेरा पिता है। जाने वे कहाँ हैं। उनको घर छोड़ ३० साल हो गये हैं।"

परन्तु पन्नालाल ने उसको न छोड़ा। आने के लिए कहा। पाँच-दस लोग जमा हो गये। उनमें से एक ने कहा—"देखकर, क्यों नहीं आते हो! हो सकता है कि तुम्हारे पिता ही इतने साल जी रहे हों! अब यह तुम्हें खोजकर, ये बातें बताने आये हैं और तुम एक हो कि न जाने की ज़िद कर रहे हो।"

गौतम खिझता-खिझता पन्नालाल के साथ गया। टूटी फूटी खाट और गई गुज़री झोंपड़ी को देखकर, गौतम बड़ा अपमानित-सा हुआ। "ये हैं—मेरा पिता! तुम मुझे यहाँ अपमानित करने के लिए लाये हो। मैंने

चुका पाऊँगा। मेरा लड़का फलाना गाँव में है, उसका नाम गौतम है। कहना कि मैं इस गाँव में हूँ। पाँच-दस दिन से ज्यादह न जीऊँगा। मरने से पहिले मैं उसे एक बार देखना चाहता हूँ। जैसे भी हो, उसे ले आना।"

पन्नालाल ने उस बूढ़े के लिए दो दिन के खाने पीने का इन्तज़ाम किया। फिर उसके बताये हुए गाँव में गया। वहाँ उसे गौतम दिखाई दिया।

"तुम्हारे पिता फलाने गाँव में अब और तब की हालत में हैं। उनको कोई

कहा भी कि मैं नहीं आऊँगा, पर तुम मुझे जबर्दस्ती खींच लाये।" वह पीछे मुड़ा।

"अरे बेटा गौतम! मैं ही तेरा पिता हूँ। आओ। एक बात कहनी है।" बूढ़ा चिल्लाया। पर गौतम बिना सुने ही चला गया। चिल्लाते-चिल्लाते बूढ़ा थक गया और वह पीछे गिर गया। पन्नालाल उसका उपचार करता, उसी झोंपड़ी में ही रह गया। उस समय बूढ़े ने पन्नालाल को अपनी सारी कहानी सुनाई।

"जिस गाँव में मेरा लड़का है वहाँ मैं भी अच्छा खाता पीता था। गौतम मेरा इकलौता है। इसलिए मैंने उसको बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा और बड़ी धूम-धाम से उसकी शादी की। पत्नी जब आयी तो मैं उनकी नज़र में काँटा हो गया। दोनों ने मुझे बुरा भला कहा और घर से निकाल दिया। मैं दूर देश चला गया। एक ज़मीन्दार के यहाँ नौकरी करके, मैं कई सालों तक अपना पेट पालता रहा। मरते समय ज़मीन्दार ने एक कलश में हज़ार सोने के सिक्के डालकर दिये। उसे लेकर मैं इस गाँव में आया। उस कलश को इस घर के आँगन में गाड़ दिया और भीख माँग कर जीवन-निर्वाह करने लगा। मैंने सोचा था कि जो कुछ गुज़रा है। उस पर मेरा लड़का पछतायेगा और अगर मुझे देखेगा, भालेगा, तो मैं उसको बुलाकर, वह सारा सोना उसको दे दूँगा। पर उसके नसीब में यह नहीं है। इस जन्म में ही, तुम मेरे लड़के हो। इस लिए तुम ही उस कलश को ले लेना। मेरे मरते ही कुछ सोना, मेरे दहन संस्कार आदि के लिए रखना और बाकी तुम ले लेना।"

उसकी बताई हुई जगह पर पन्नालाल ने खुदवाया और वहाँ से गड़ा कलश

निकलवाया। दो दिन बाद बूढ़े ने सदा के लिए आँखें मूँद लीं। पन्नालाल ने शास्त्रोक्त विधि से उसका दहन संस्कार करवाया।

इस बीच सोने की बात आसपास के गाँवों में सब जगह फैल गई। गौतम को भी यह खबर पहुँची कि किसी भिखारी ने, किसी राहगीर को हज़ार सोने के सिक्के दे दिये थे। जब वह पत्नी को लेकर पहुँचा, तो पन्नालाल उसकी तेरहवीं मना रहा था। आसपास के गाँवों से ब्राह्मणों ने आकर भोजन किया। एक एक को, एक एक सोने का सिक्का पन्नालाल ताम्बूल के साथ दे रहा था।

पन्नालाल ने गौतम और उसकी पत्नी को आया देखकर पूछा—"तो आप अब आये हैं? पहिले भोजन कीजिये।" भोजन करने के बाद, पन्नालाल ने उनको भी पान दिया। गौतम ने पन्नालाल से कहा—"मेरे यहाँ से चले जाने के बाद ही मैं निश्चित रूप से जान सका कि बूढ़ा ही मेरा पिता था। उसने कहीं सोने के सिक्कों से भरा कलश रखा था। कहाँ है वह? लड़का हूँ। इसलिए वह मुझे मिलना चाहिए।"

"आप देख लीजिए कि ताम्बूल के साथ सोने के सिक्के हैं कि नहीं और यह रहा कलश।" पन्नालाल ने खाली कलश लाकर, गौतम के सामने रखा।

पन्नालाल के तेरहवीं के सहभोज के बारे में और लोगों को पान के साथ दिये हुए सिक्कों के बारे में, जब गौतम ने लोगों को कहते सुना, तो वह जान गया कि कलश क्यों खाली था?

संसार के आश्चर्य : २९. यूटा में पत्थर के तोरण

यूटा प्रान्त (अमेरिका) में पत्थर के तोरण बड़े विचित्र हैं। चार करोड़ वर्षों से हवा ने रेत के दीवारों में जो छेद बनाये उनके कारण ये बने हैं। इनमें से कुछ ३०० फीट ऊँचे हैं। कई सैकड़ों गज ऊँचे हैं। कुछ तोरण हवा से घिस घिसा गये हैं। मान्युमेन्ट घाटी में इस प्रकार के तोरण ८१ हैं। (चित्र में एक तोरण युगल दिखाया गया है।)

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत परिचयोक्ति

सर न कभी झुकायेंगे !

प्रेषक : अनिल जयस्वाल-नागपुर

Photo by Madan Gopal
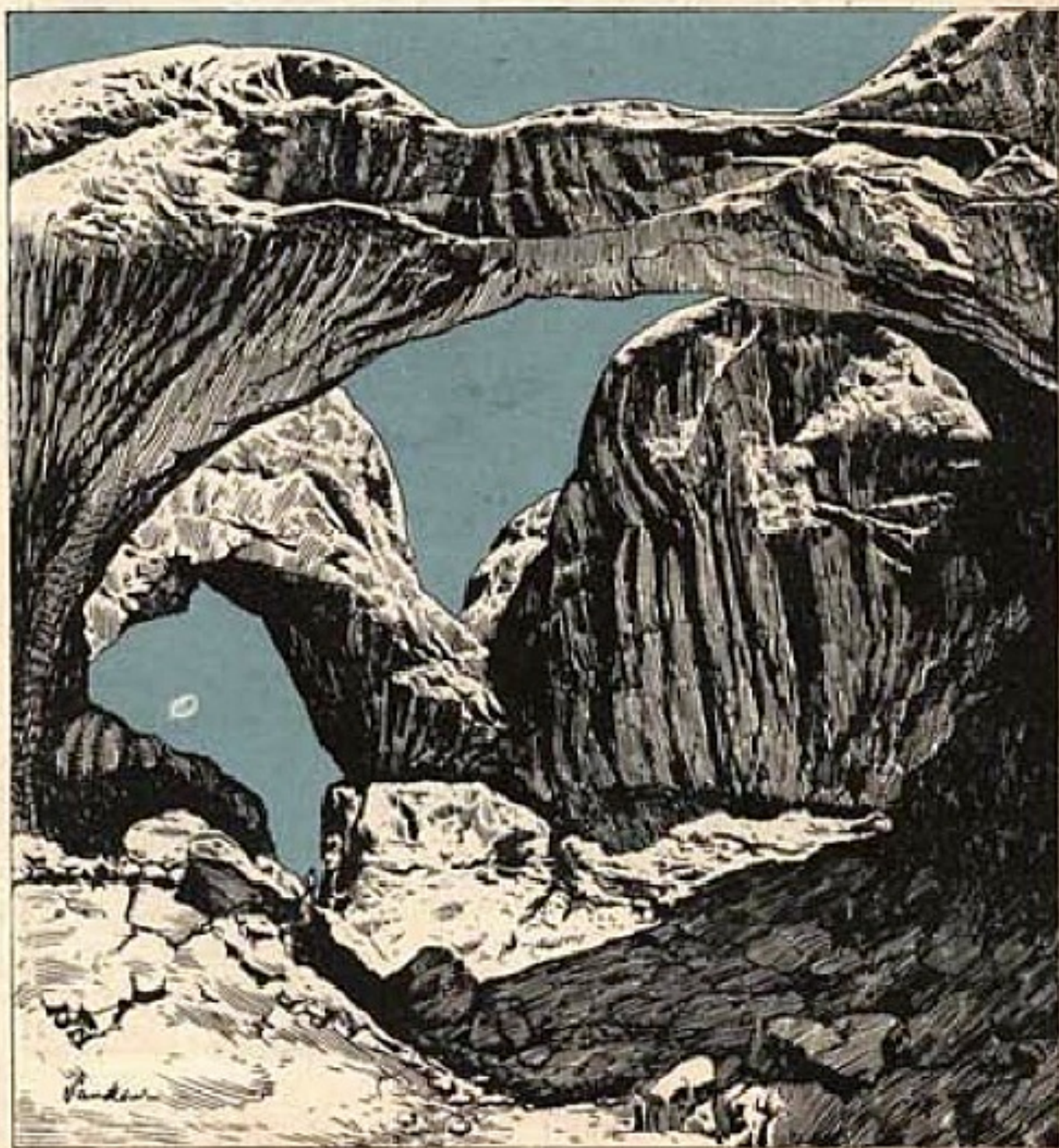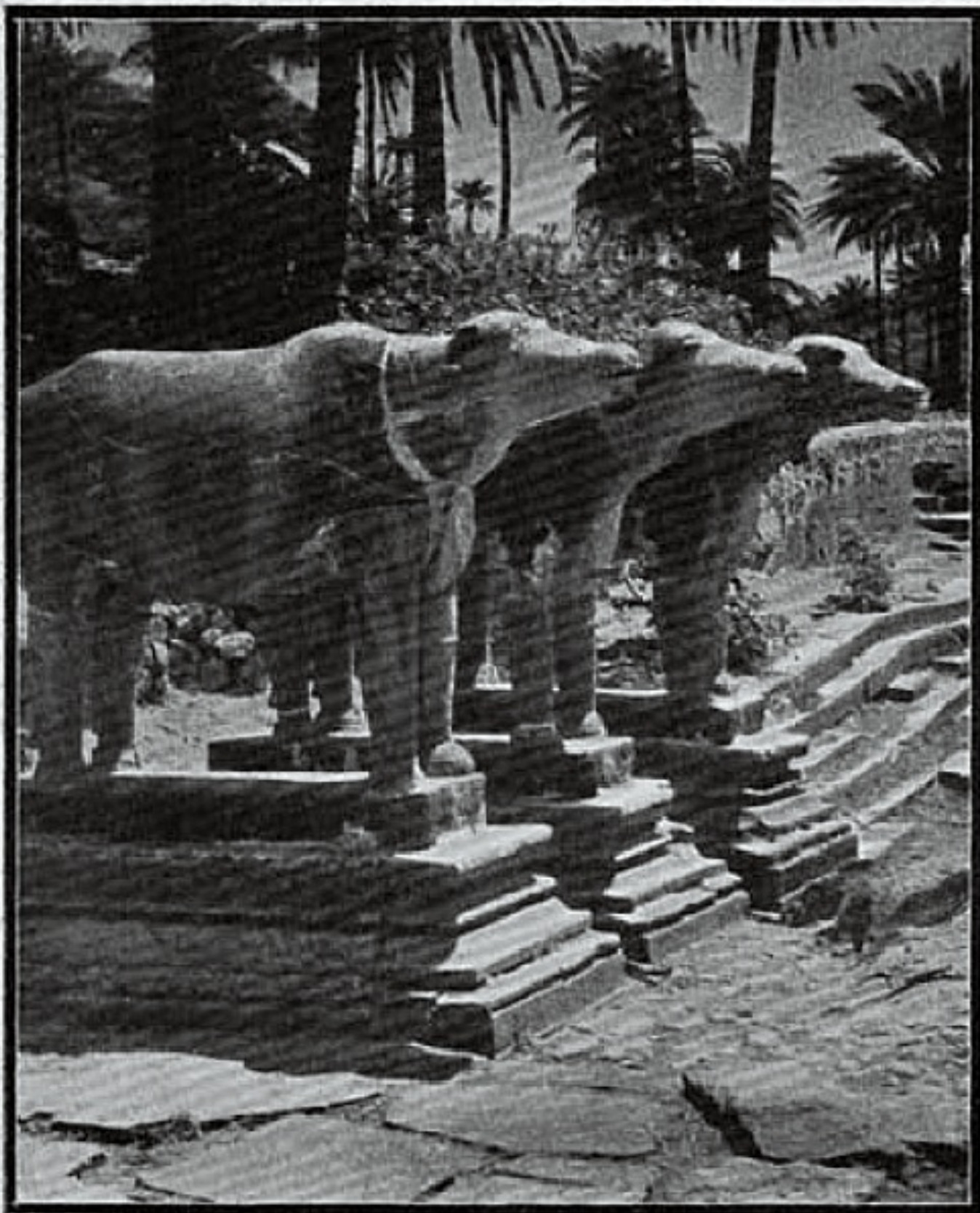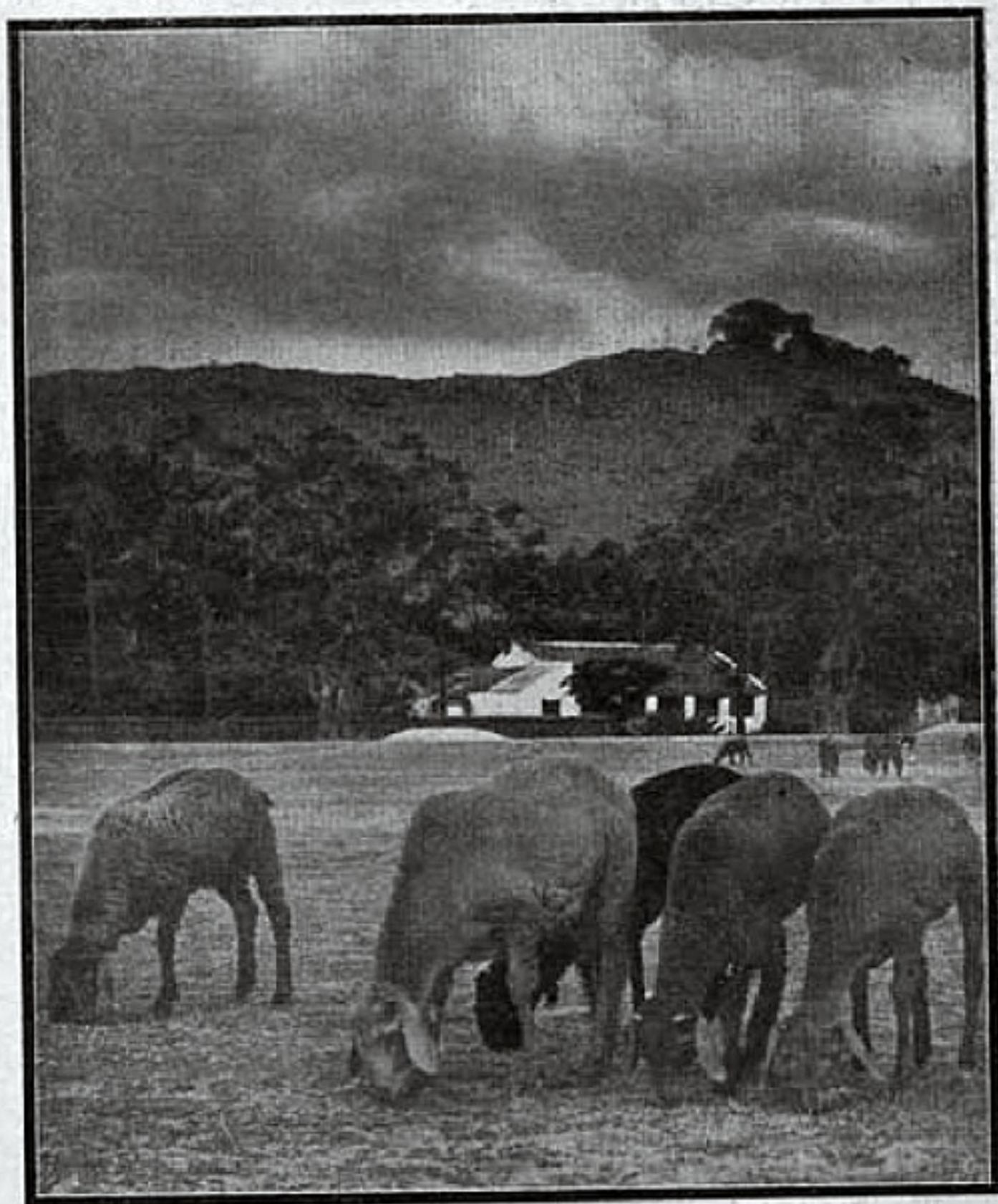
पुरस्कृत परिचयोक्ति

तो पेट न भरने पायेंगे !!

प्रेषक : अनिल जयलाल-नागपूर